R.N.I. No. 2321/57
ओ३म्
रजि. सं. MTR नं. 04/2013-15
सितम्बर 2014
अंक 8

तपोभूमि

मासिक

सम्पादकीय

भाषा की दुर्दशा ही हमारी दुर्दशा का है मूल कारण

कभी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने भावों को प्रकट करते हुए इस सच्चाई को बताया था कि–

निज भाषा उन्नत अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।।

अर्थात् सारी उन्नतियों का मूल अपनी भाषा की उन्नति पर निर्भर करता है। बिना अपनी भाषा की उन्नति के किसी प्रकार की उन्नति होना दुष्कर है। महर्षि दयानन्द ने उन्नति के प्रारूप को तीन भागों में बाँटा है। शारीरिक उन्नति, आत्मिक उन्नति और सामाजिक उन्नति। निश्चित रूप से अपनी भाषा में व्यक्ति निर्भय होकर अपनी बात रख सकता है और समझ सकता है। इससे उसका मस्तिष्क दबाब नहीं मानता है और मन प्रसन्न रहता है जिसका शरीर पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और व्यक्ति के स्वास्थ्य पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। जिससे तनावमुक्त होकर जीवन जीने से शरीर स्वस्थ रहता है। स्वस्थ शब्द का अर्थ ही है कि अपने में ठहर जाना। बिना अपनी भाषा के व्यक्ति अपने भावों में कभी भी ठहर नहीं पाता है। हमने प्रायः करके ग्रामीणों के उस वर्ग को देखा है जिसकी अपनी भाषा अब भी मूल रूप से वही है जो जन्म के समय थी उनसे जब बात करते हैं तो उनमें भाषा की निश्छलता, सरलता, राष्ट्रवादिता सभी कुछ मनोहर प्रतीत होता है अपनी भाषा की अभिव्यक्ति में उनको स्वयं आनन्द आता है और वे उससे हमें भी आनन्दित कर देते हैं उनकी भाषा हृदय के भावों से ऐसी आप्यायित रहती है कि श्रोता पर सीधा सा असर डालती है। दूसरी ओर उन्हीं व्यक्तियों की नई पीढ़ी जो अपनी मूल भाषा को बिल्कुल विकृत कर चुकी है उसकी भाषा ऐसी विदेशी भाषा के मेल से कर्कश हो गयी है। जैसे स्वादिष्ट खीर में कोई कंकण के अति सूक्ष्म कण डाल दे और वे कण खीर खाते समय किरकिराहट पैदा करें तो खीर का सारा स्वाद ही समाप्त हो जाता है। बस वही हाल आज की पीढ़ी द्वारा बोली जाने वाली अधकचरी भाषा का है। क्योंकि अंग्रेजी मिश्रित भाषा ने भाषा का सारा स्वाद बिगाड़ के रख दिया है। वह हृदय की भाषा बन ही नहीं पायी है। गुप्तजी ने ठीक ही कहा कि–

उनकी गल–ध्वनि कर्ण में ही कठिनता से पैठती।
अन्तःकरण की बात ही अन्तःकरण में बैठती।।

यह निश्चित बात है कि भाषा में विकृति आने पर भाव दूषित हो जाते हैं। जिससे व्यक्ति का चरित्र दूषित हो जाता है। चरित्र दूषित होने से आत्मिक पतन का मार्ग खुल जाता है। व्यक्तियों से ही समाज का निर्माण होता है। आत्मिक पतन जब व्यक्ति का हो जाता है तो वह सामाजिकता को एक तरफ रखकर अपनी स्वार्थ की सिद्धि में लगकर समाज का और राष्ट्र का भयंकर पतन करने पर उद्यत हो जाता है। दिनकरजी ने ठीक ही कहा है कि–

जब स्वार्थ मनुज की आँखों पर माड़ी बनकर छा जाता है।
तब वह मानव से बड़े–बड़े नये दुश्चिन्त्य कृत्य करवाता है।।

आज हम देखते हैं कि सर्वत्र बलात्कार, रिश्वतखोरी, चोरी, डकैती, मारकाट का बोल–बाला है। यह मात्र भाषा की विकृति का दुष्परिणाम है। डाक्टर राममनोहर लोहिया जो राजनीति में एक प्रखर चिन्तक, तपस्वी, प्रखर समाज सुधारक थे उन्होंने स्वतंत्र भारत में इस तथ्य को सबके सामने प्रमुखता से रखा था कि जब तक जनता और सत्ता की भाषा एक नहीं होती, तब तक देश से भ्रष्टाचार मिटाना सम्भव नहीं है। हम अपनी भाषा को जो गौरव मिलना चाहिए वह नहीं दे पाये, उसी का दुष्परिणाम सारा राष्ट्र घोर अशान्ति के वातावरण के रूप में भुगत रहा है। आज भी हमने देखा है कि नेता जब वोट मांगते हैं तब जनता की भाषा में बात करते हैं और संसद में जाकर वक्तव्य या शपथ ग्रहण अंग्रेजी में करते हैं। यद्यपि इसका दुष्परिणाम इस बार कांग्रेस पार्टी भोग चुकी है। वह अपने शासनकाल की उपलब्धियाँ को उन मन्त्रियों के द्वारा बखान करवाती रही जो केवल अंग्रेजी भाषा को ही जानते थे जबकि देश की जनता 90 प्रतिशत अंग्रेजी समझती नहीं थी और भारतीय जनता पार्टी उनके शासन के दोषों को उस भाषा में बताती रही जिसको सामान्य जनता समझती थी। अतः जनता से भारी बहुमत उसी दल को दे दिया जो देशी भाषा में जनता के सम्पर्क में था। कुछ अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों ने देश में ऐसा भ्रम फैलाया वह भी केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कि बिना अंग्रेजी पढ़े व्यक्तित्व का विकास होगा, नहीं जो अंग्रेजी नहीं पढ़ेगा वह सब तरह अविकसित रह जायेगा। उसका दुष्परिणाम यह हुआ सारा समाज अंग्रेजी भाषा के पीछे पागल होकर भाग रहा है। और हमारे देश के भविष्य बच्चे अपनी भाषा भी खो बैठे, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सकता था और अंग्रेजी भी पढ़ नहीं सके। वही कहावत सिद्ध हुई चले थे चौबेजी छब्बेजी बनने रह गये दुबे जी। कुछ चालाक लोग अंग्रेजी का लाभ उठाकर अयोग्य होते हुए प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर गये और इस लूट–पाट की भाषा का प्रयोग कर सारे देश को उल्लू बनाकर मौज मार रहे हैं। दुर्भाग्य इस देश का है जिस पर गुलामी का असर अब तक नहीं गया। भाषा विहीनता के कारण हम अपना सर्वस्व खो चुके हैं। बिना भाषा आप अपना विकास किसी प्रकार से भी नहीं कर सकते हैं। हिन्दी भाषा को मेंटने का काम हमारी सरकारें भी कर रही हैं जिससे नई पीढ़ी सारी–सारी भावविहीन होकर वेदना शून्य हो गयी है। जो भाव बच्चा द्वारा माँ को मैया कहने में उत्पन्न होता है वह मोम कहने में कहाँ रखा है। मौसी, बुआ, मामी, चाची, ताई आदि शब्दों के स्थान पर भाव शून्य आण्टी शब्द क्या भावों से भावित कर सकता है। इस प्रकार सर्वत्र वैयक्तिक सामाजिक, राष्ट्रिय जीवन में विकृति का मूल कारण भाषा की विकृति ही है। आज का डाक्टर, इंजीनियर, वकील, जज यहाँ तक की शिक्षक भी अपनी राष्ट्रभाषा को शुद्ध लिखने में व बोलने में असमर्थ हैं। बिना भाषा के भाव शून्यता आना स्वाभाविक है जिससे व्यक्ति जीवन से निराश होकर आत्महत्या आदि करने को प्रवृत्त

–शेष पृष्ठ संख्या 35 पर–

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–60 संवत्सर 2071 सितम्बर 2014 अंक 8

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादक:
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

सितम्बर 2014

सृष्टि संवत्
1960853115

दयानन्दाब्द: 190

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा
(उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाष:
0565–2406431
मोबा. 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4
दयानन्द दिग्विजयम्	–आचार्य मेधाव्रत	5–8
योगेश्वर कृष्ण	–पं0 चमूपति	9–10
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योग	–डॉ0 सोमदेव शास्त्री	11
इस्लाम कैसे फैला	–प्रीतम अमृतसरी	12–15
वेदकालीन पर्वपद्धति	–उदयनाचार्य	16–17
षोडश कला	–महात्मा ओम्मुनि	18–19
आज का चाणक्य योगीराज बाबा रामदेव	–खुशहालचन्द्र आर्य	20–22
भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ....	–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक	23–26
वैदिक विज्ञान की शब्दावली	–कृपालसिंह वर्मा	27–29
अन्धेर खाता	–कवि नाथूराम शंकर शर्मा	30–34

❋ ❋ ❋

वार्षिक शुल्क 150/ पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

वेदवाणी

डॉ० रामनाथ वेदालंकार

अदारसृद्भवतु देव सोमास्मिनयज्ञे मरुतो मृडता नः।
मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या॥ –अथर्व0 1/20/1

शत्रु हमारे शस्त्रागार पर अधिकार न कर ले

शब्दार्थः–

(देव सोम) हे दीप्तिमान् राष्ट्रनिर्माता! शत्रु (अदारसृद् भवतु) हमारे शस्त्रागार तक पहुँचनेवाला न हो। (मरुतः) हे वीर योद्धाओ! (अस्मिन् यज्ञे) इस राष्ट्रयज्ञ में अथवा रणयज्ञ में (नः मृडत) हमें सुखी करो। (नः) हमें (मा अभिभाः विदत्) न अभिभव पराजय प्राप्त हो, (मो अशस्तिः) न अप्रशस्ति। (मा नः विदत्) न हमें प्राप्त करे (वृजिना) वर्जनीय क्रिया (या द्वेष्या) जो द्वेष करने योग्य हैं।

भावार्थः–

हे तेजस्वी राष्ट्रनिर्माता राजन्! आपने राष्ट्र को उच्च अभ्युदय तक पहुँचा दिया है। किसी का साहस नहीं है कि आपसे शत्रुता ठाने। यदि कोई साहस करेगा भी तो वह मुँह की खायेगा। फिर भी यदि कोई शत्रु आपके राष्ट्र पर चढ़ाई करता है, तो आप पूर्णतः सतर्क रहें। शत्रु आपके शस्त्रागार को अपने अधिकार में करने का षडयंत्र कर सकता है। यदि वह आपके शस्त्रागार पर अधिकार कर लेता है, तो आपके ही शस्त्रास्त्रों से आपकी प्रजा हताहत होगी, आपकी ही तोपें आपके भवनों पर गोले बरसायेंगी, आपके ही बम के गोले आपके ही राष्ट्र को खाक में मिलायेंगे। इसलिए शस्त्रागार की सुरक्षा परमावश्यक है। आप अपने वीर योद्धाओं से शत्रुदल को उसकी ही सीमा में परे खदेड़ दें, वह आपकी भूमि में प्रविष्ट ही न हो पाये। हे वीर सैनिकों! टूट पड़ो शत्रुदल पर। शत्रु को पराजित करके, शत्रुभय को निर्मूल करके हमें सुखी करो, निश्चिन्त करो।

हे वीरो! ध्यान रखो, हमें पराजय का मुख न देखना पड़े। हमें अप्रशस्ति प्राप्त न हो, हमारा कीर्तिगान हो, तुम्हें रणचातुरी दिखाने के उपलक्ष्य में पदम्चक्र प्राप्त हो, वीरचक्र प्राप्त हो। राष्ट्रपति के हाथों से तुम्हें विजयप्रतिमा प्राप्त हो। शत्रु द्वारा युद्ध छेड़ने पर हम वर्जनीय क्रियाएँ कभी न करें। शत्रु को शरण न दें, शत्रु को रसद न पहुँचाएँ, शत्रु को अपने राष्ट्र की किसी गतिविधि का भेद न दें। यदि हम ऐसा करते हैं तो यह राष्ट्र के साथ विश्वासघात होगा। ये सब क्रियाएँ द्वेष करने योग्य हैं, इनसे हमें हानि–ही–हानि होगी। हम बन्दी बनाये जायेंगे, हमें बन्दूक की गोली से उड़ाया जा सकता है। सावधान, राष्ट्रद्रोह का विचार भी कभी मन में न लाओ। 'वन्दे मातरम्' के गीत गाने, राष्ट्र के प्रति न्योछावर होने की दीक्षा लो। ❀❀❀

गतांक से आगे–

दयानन्द दिग्विजयम्

लेखकः आचार्य मेधाव्रत

दशमः सर्ग

अवर्णनीया गुरुभक्तिरेषामन्तेसदां शिष्यविभूणानाम्।
आदर्शभूतेह यथाऽभवत्सा तथा दयानन्दमुनेरमेया।। 58।।

जिस प्रकार इन शिष्यों की गुरुभक्ति अवर्णनीय थी, वैसे ही दयानन्द की गुरुभक्ति भी अनुपम एवं आदर्श थी॥ 58॥

स्नानार्थमाचार्यवरस्य नित्यं ब्राह्मे मुहूर्त्ते जलकुम्भजालम्।
भक्त्याऽऽनयन्निर्झरिणीप्रतीरात् स्कन्धेन् वातातपशीतकाले।। 59।।

स्वामीजी ब्राह्ममुहूर्त में उठकर, वर्षा, शीत और आँधी की परवाह किये बिना भक्ति से आचार्यवर विरजानन्दजी के स्नानार्थ नियमिततापूर्वक यमुना से घड़ों पानी लाया करते थे॥ 59॥

कलिन्दकन्यामलमध्यधारां प्रविश्य नीरं गुरुपानहेतोः।
पवित्रमानीय ददौ विनम्रोविराजते भक्तियुता हि विद्या।। 60।।

आचार्यजी के पीने के लिये यमुना की बीच धारा का निर्मल जल विनम्र स्वामीजी ले आया करते थे, क्योंकि विद्या भक्ति से ही शोभित होती है॥ 60॥

श्रद्धामयी श्रीगुरुदेवसेवा सदा तदाज्ञापरिपालनानि।
विद्यार्थिनोऽस्य प्रतिभान्विता धीर्गुरोः कृपाकारणतां गतानि।। 61।।

प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक गुरुदेव की सेवा, उनकी आज्ञा का पालन और प्रतिभाशालिनी बुद्धि इन तीनों कारणों से दयानन्दजी गुरुदेव के कृपापात्र बन गये थे॥ 61॥

आचार्यदेवोऽप्यमुना समं सन् व्यवहारन्नन्यविनेयवन्नो।
साधुस्वभावे विजितेन्द्रियेन्द्रे स्नेहो भृशं स्यान्नहि कस्य शिष्ये।। 62।।

आचार्य देव भी इनके साथ दूसरे शिष्यों की तरह व्यवहार नहीं रखते थे। भला साधु–स्वभाव–सम्पन्न, जितेन्द्रिय शिष्य पर किस गुरु का अत्यन्त स्नेह न होगा?॥ 62॥

सदा भ्रमोन्मूलनपण्डिताऽभूदमुष्य जिह्वाऽनृतखण्डिनीति।
स कालजिह्वो गुरुणोच्यते स्म स्नेहप्रसन्नेन सतां वरेण।। 63।।

दयानन्दजी की जिह्वा सदा भ्रमनिवारण में चतुर और मिथ्या बातों के खण्डन में प्रवीण थी।

इसलिये स्नेह से प्रसन्न होकर सन्तशिरोमणि विरजानन्द इन्हें कालजिह्व कहा करते थे॥ 63॥

स शक्नुयाच्छंकुरिवाचलांगोधीरः पराजेतुमनंगजेता।
विपक्षिलोकानिति तं गुरुर्नु ध्रुवोपनाम्ना निजगाद तुष्टः॥ 64॥

यह कामदेव-विजेता दयानन्द अचल स्तम्भ की तरह सुदृढ़ शरीर से विपक्षियों के पराजय करने में शक्तिमान् होगा। ऐसा जानकर गुरु प्रसन्नता से उन्हें कुलक्कर कहा करते थे॥ 64॥

न केवलं ज्ञानधनाभिलाषी विद्यार्थिवर्योऽपितु पीडितायाः।
पुण्यार्यभूमेरुदयाभिकांक्षी व्यज्ञायि विज्ञेन दयालुचेताः॥ 65॥

स्वामी विरजानन्दजी यह जानते थे कि दयार्द्रहृदय दयानन्द न केवल ज्ञानार्थी ही हैं, किन्तु यह पीड़ित आर्यभूमि के अभ्युदय का भी आकांक्षी है॥ 65॥

प्राग् जन्ययानात् प्रविशेद् यथा ना शस्त्रालयं शस्त्रचयं ग्रहीतुम्।
शास्त्रार्थसंख्याय स पाठशालां शास्त्रार्थतत्त्वानि विवेश वीरः॥ 66॥

जैसे योद्धा युद्ध में जाने से पूर्व शस्त्रागार में जाकर शस्त्र-समूह का संग्रह करता है, वैसे ही दयानन्दजी शास्त्रार्थ-युद्ध में विजयी होने के लिये शास्त्र-तत्व के संग्रहार्थ गुरुगृह में प्रविष्ट हुए थे॥ 66॥

मनीषितं पूरयितुं मनीषी समर्थलोच्य तमात्मशिष्यम्।
चिराय चिन्तातपशुष्कचित्तोजहर्ष मेघं कृषको यथाऽसौ॥ 67॥

जैसे चिरकालीन चिन्ता-ज्वर से शुष्क-शरीर कृषक अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये समर्थ, आये हुए मेघ को देखकर प्रसन्न होता है, वैसे ही अपनी सब इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ इस सुशिष्य को देखकर मनीषी विरजानन्द प्रसन्न हो गये॥ 67॥

चिरस्य संपालितलालितश्रीसंकल्पसाम्राज्यसमाधिकारी।
मद्ब्रह्मचारी भवितेति शान्तं स्वान्तं गुरोरस्य बभूव मत्वा॥ 68॥

चिरकाल से अपने लालित पालित शुभ संकल्पों के साम्राज्य का एक मात्र उत्तराधिकारी यह मेरा ब्रह्मचारी होगा, ऐसा जानकर गुरु विरजानन्दजी के हृदय को परम सन्तोष हुआ॥ 68॥

श्रीवेदधर्मार्यजनोदयाख्ये महामखे कं नु जनं नियुंज्याम्।
होतारमित्येनमवेक्ष्य योग्यं शशाम चिन्ताग्निनिन्ध्यवृत्तेः॥ 69॥

वैदिकधर्म के उद्धार एवं आर्यभूमि के अभ्युदय रूप महायज्ञ में मैं होता किसे बनाऊँगा-इस प्रकार की इन गुरु की चिन्ताग्नि ऐसे पवित्र शिष्य को देखकर शान्त हो गई॥ 69॥

आर्षप्रचारामलवैजयन्तीं पाखण्डिलीलामिह तर्जयन्तीम्।
स्कन्धेन वोढेत्यलमस्य वाग्मी तुष्टं मनो देवमनो हरन्तीम्॥ 70॥

यह वाग्मी इस संसार में पाखण्डियों की लीला का खण्डन करनेवाली, विद्वानों के मनों को हरनेवाली, आर्ष विद्याओं के प्रचाररूप निर्मल वैजयन्ती को अपने कन्धों पर धारण करने में अत्यन्त समर्थ है,-ऐसा देखकर गुरु का मन आनन्द विभोर हो उठा॥ 70॥

सच्छास्त्रविद्यानिधिमन्दिरान्तर्विष्कम्भकोन्मुद्रणकुंचिकेव।
निरुक्तपातंजलपाणिनीयद्वयग्रन्थेऽमुनाऽस्मै कृतिता वितीर्णा॥ 71॥

गुरु ने इन्हें वेद और शास्त्रों के मन्दिर में प्रवेश के लिये विद्यानिधि के द्वार का ताला खोलने के लिये चाबी की तरह निरुक्त और महाभाष्य इन दोनों में निपुणता प्रदान कर दी॥ 71॥

वेदार्थसंधारणबोधनादेर्यथार्थशैलीमवबोध्य सम्यक्।
तदीयसंशीतिततिं स दण्डी निराकरोत्पण्डितमण्डनेशः॥ 72॥

पण्डित–मण्डल के अलंकाररूप दण्डीजी ने वेदार्थ समझाने की यथार्थ शैली अच्छी प्रकार बताकर इनके सभी संशयों को मिटा दिया॥ 72॥

सद्धर्मशास्त्रार्थरणांगणाग्रे तिष्ठेदजेयो नयसंस्कृतात्मा।
गूढार्षविद्याऽक्षयवर्मरत्नेनालंकृतोऽलं गुरुणेति शिष्यः॥ 73॥

उत्तम धर्म की शास्त्रार्थरूपी युद्धभूमि में मेरा शिष्य शास्त्र संस्कारों से परिष्कृत बुद्धि होकर अजेय रहे, इसलिये गूढ़ आर्ष विद्या के अक्षय कवच–रत्न से अपने शिष्य को अलंकृत कर दिया॥ 73॥

स ब्रह्मचर्योज्ज्वलजातवेदःप्रतप्तहेमप्रभकायकान्त्या।
महार्हविद्यामणिमौक्तिकालीश्रीशालिकण्ठो नितरां दिदीपे॥ 74॥

ब्रह्मचर्य की उज्ज्वल अग्नि से तप्त हुए सोने के समान चमकते शरीर की कान्ति से तथा अमूल्य विद्यारूपी मोतियों एवं रत्नों की माला से भूषित कण्ठवाले ब्रह्मचारी दयानन्द अत्यन्त ही दमकते थे॥ 74॥

अगाधविद्योन्नमनोऽपि नम्रः फलेग्रहिद्रूपम उन्नतात्मा।
अनन्तवीर्याम्बुधिरप्यमन्दं जुगोप सीमां बतिसार्वभौमः॥ 75॥

ये ब्रह्मचारी–सम्राट् अगाध विद्याओं से उन्नतात्मा होने पर भी फलवारी वृक्ष की तरह नम्र थे, अनन्त वीर्य के सागर होने पर भी अत्यन्त मर्यादा–पालक थे॥ 75॥

स जन्मदातुः पितुरप्यमुष्मिन् श्रद्धाधिकत्वं निदधौ गुरौ स्वे।
आध्यात्मिकत्वेन गुरु गरीयान् सद्ब्रह्मदाता जनकाज्जात्याम्॥ 76॥

स्वामीजी अपने गुरु पर पिता से भी बढ़कर श्रद्धा रखते थे। क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टि से सद्ज्ञानप्रदाता गुरु जगत् में पिता से श्रेष्ठ होता ही है॥ 76॥

सुशिष्यमुक्तामणिहारहीरं छात्रेशमेनं तनयं स मेने।
निजाभिलाषनुगुणैकचित्ते प्रेमोचितं तस्य हि धर्मवित्ते॥ 77॥

दण्डीजी भी शिष्यरूपी मोतियों की माला में हीरे के समान इस छात्रवर को पुत्रतुल्य ही मानते थे। अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण करनेवाले धर्मधन शिष्य पर गुरु का प्रेम योग्य ही था॥ 77॥

दण्डीन्द्रदण्डेन स दण्डितोऽयं प्रचण्डदोर्दण्डदयालुदेवः।
गुरूपकारस्य गुरोः कृपालोः सस्मार भक्त्याऽऽमरणं गुणज्ञः॥ 78॥

प्रचण्ड बाहुदण्ड से सुशोभित दयालु दयानन्द देव दण्डीजी के दण्ड से दण्डित हुए थे। किन्तु गुणशाली दयानन्द कृपालु गुरु देव के इस महान् उपकार को भक्तिपुरस्सर आजन्म याद करते रहे॥ 78॥

–शेष अगले अंक में

योगेश्वर कृष्ण

दुर्योधन की वीरगति

लेखकः पं. चमूपति

शल्य के मरते ही कौरव-सेना में भगदड़ मच गई। पाण्डव-दल ने पीछा कर असंख्य सैनिकों का संहार किया। यहाँ तक कि कौरवपक्ष के महारथियों में से केवल चार-अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा तथा स्वयं दुर्योधन ही बच रहे। दुर्योधन भागकर द्वैपायन नाम के सर में जा छिपा। शेष तीनों वीरों ने बीहड़ जंगल का रास्ता लिया। पाण्डवों ने दुर्योधन की खोज में रणभूमि का चप्पा-चप्पा छान मारा। अन्त को शिकारियों के एक समूह ने, जो दुर्योधन को कृप आदि के साथ वार्तालाप करते सुन चुके थे, भीम को दुर्योधन के छिपने के स्थान की सूचना दी। पाण्डव कृष्ण-समेत वहाँ पहुँचे और दुर्योधन को लड़ने के लिए ललकारा। युधिष्ठिर उसके इस प्रस्ताव को न्याय समझा कि उसके साथ पाण्डवों में से कोई एक गदायुद्ध करे। इसमें जो पक्ष जीत जाय, राज्य उसी का हो। कृष्ण को युधिष्ठिर का यह निर्णय कोरी मूर्खता प्रतीत हुआ। जो राज्य इतनी कठिनता से जीता था, उसे एक द्वन्द्व-युद्ध पर निर्भर कर देना भला कौन-सी बुद्धिमत्ता है? यह युधिष्ठिर का एक और जुआ था। जो मनुष्य जीवन से निराश हो चुका हो, जिसके लिए जीना-मरना एक-सा हो, जिसकी दृष्टि में हार जाना या प्राणों तक से हाथ धो लेना कोई घाटे का सौदा न हो, क्योंकि वह मर तो पहले ही रहा है-उसके साथ लड़ाई ठानना अपने प्राणों को व्यर्थ ही बलि चढ़ाना है। उसे तो अब जान तोड़कर लड़ना ही है। यदि वह मर जायगा, तो इससे उसको नई हानि क्या होगी? ऐसे हताश मनुष्य के मुकाबिले में अपनी जान मुफ्त जोखों में डालना और कुछ हो, नीति नहीं। किसी एक पाण्डव पर विजय पा ही ली तो दूसरों को उसे नीचा दिखाने का अधिकार क्यों न हो? यदि सारा महाभारत का युद्ध युधिष्ठिर के स्वीकार किये न्याय-नियम पर लड़ा गया होता तो बात और थी। तब तो अभिमन्यु युद्ध को कभी का जीत चुका होता। जब सारा युद्ध इस नियम के विरुद्ध लड़ा गया है, तब तो अनियम ही नियम है। युद्ध का यह परिशिष्ट-भाग इस अनियम-रूप नियम का अपवाद क्यों हो? पर अब तो युधिष्ठिर द्वन्द्व-युद्ध की स्वीकृति दे चुके थे। कृष्ण के लिए थोड़ी देर कुढ़कर चुप ही रहने के सिवाय चारा ही क्या था?

दुर्योधन से गदा-युद्ध करने को भीम आगे निकला। इस समय तक श्रीकृष्ण के भाई बलराम भी तीर्थयात्रा से लौट आए थे। दुर्योधन और भीम दोनों गदा-युद्ध की विद्या में उन्हीं के शिष्य थे। उनकी दुर्योधन पर विशेष कृपादृष्टि थी, क्योंकि वह इस विद्या में अधिक निपुण था। वे भी अपने शिष्य-युगल

का गदा–साम्मुख्य देखने लगे। पराक्रम दोनों का देखने योग्य था। दोनों ने युद्ध–विद्या के अच्छे हाथ दिखाए। चक्रों में, चालों में, दाँवों में पेचों में एक–दूसरे को मात ही तो कर रहे थे। परास्त कोई न होता था।

अर्जुन कौतूहलभरी आँखों से अपने भाई के कौशल को देख रहा था। दोनों पक्षों को बराबर पराक्रम दिखाता वह अधीर हो उठा। उसने श्री कृष्ण से पूछा–आपकी सम्मति में विजय किसकी होगी? कृष्ण भी गदा–युद्ध के धनी थे। उनके हथियारों में गदा भी उतनी ही प्रसिद्ध है जितनी तलवार और चक्र। उन्होंने कहा–बलवान् तो भीम अधिक है, परन्तु युद्ध के दाँव दुर्योधन को अधिक आते हैं और विजय आखिर दाँवों ही की होती है। लड़ाई नियम–पूर्वक रही तो भीम हार जाएगा। हाँ, यदि उसे अपनी वह प्रतिज्ञा स्मरण आ जाय तो उसने दुर्योधन के निर्लज्जता–पूर्वक भरी सभा में द्रौपदी के सम्मुख अपनी रान खोल दिखाने पर की थी कि 'यदि मैं दुर्योधन की वह रान गदा से न तोड़ूँ तो नारकी होऊँ' तब जीत भीम की हो सकती है।

अर्जुन युद्ध के नियमों का बड़ा पक्षपाती था, परन्तु अब तो वह भी कौरव–दल के द्वारा किये गए अनियमों और उनके प्रत्युत्तर में किये गए अपने पक्ष के नियम–भंग का मानो अभ्यस्त–सा हो गया था। वह भीम के सम्मुख जा खड़ा हुआ और उसने उसे दिखा–दिखाकर अपनी रान पर हाथ मारा।

गदा–युद्ध में नाभि के नीचे वार करना वर्जित है। भीम ने पहले तो दुर्योधन के सामने यथापूर्वक चक्कर काटे और कई प्रकार के सरल दाँवों से गदा के वार किये। अन्त में जब वह ऊपर को उछला तो इसने गदा के प्रखर प्रहार से उसकी रान तोड़ दी। इस प्रहार का आघात इतना प्रबल हुआ कि वह अन्तिम साँस लेने लगा।

बलराम इससे जोश में आ गए और भीम को उसके नियम–भंग का दण्ड देने को आगे बढ़े। परन्तु कृष्ण ने अपनी भुजाओं के घेरे में उन्हें रोक लिया और यह कहकर उनका जोश ठण्डा किया कि वह नियम–भंग भीम ने अपनी प्रतिज्ञा–पालनार्थ किया है। बलराम उसी कुपित अवस्था में रण–क्षेत्र से चल दिये।

भीम दुर्योधन को मार गिराने से ही सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने गिरे हुए दुर्योधन के सिर पर लात मारी और उसे कुवाक्य कहे। युधिष्ठिर इस पर बिगड़ा। आखिर वह भी तो राजा था। एक दम तोड़ रहे राजा का वृथा का अपमान उसे असह्य हुआ। कृष्ण ने भी कहा–मरे धूर्त्त को और क्या मारना? इस पर दुर्योधन को क्रोध आ गया। उसने कृष्ण को खूब जली–कटी सुनाई। उसे कहा–''भीष्म का कूटविधि से वध अर्जुन से करानेवाले तुम ही तो हो! द्रोण की मृत्यु के लिए असत्य–भाषण की मन्त्रणा देनेवाले तुम ही तो हो! जयद्रथ को मरवानेवाले तथा भूरिश्रवा का सिर उसकी योगावस्थित स्थिति में कटवा देनेवाले और फिर कर्ण पर आपत्ति में वार कराने वाले तुम्हीं तो हो! अब यदि तुम्हारी सलाह से अर्जुन ने भीम को इशारा कर गदायुद्ध के नियमों के विरुद्ध मेरी भी रान तुड़वा दी तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? मैं इतने नियमों के भंग का दोष अकेले तुम्हारे सिर पर धरकर तथा तुम सबको नारकीय बनाकर स्वर्ग चला हूँ।''

श्री कृष्ण ने दुर्योधन को वही उत्तर दिया जो वे इससे पूर्व कर्ण को दे चुके थे। इतने में दुर्योधन ने आँखें मींच लीं और परलोक के प्रस्थान की तैयारी करते-करते कहा-"हमें तो क्षत्रियोचित गति प्राप्त हो गई है। इसी दिन के लिए क्षत्रिय-पुत्र संसार में आता है। रहे युद्ध के अनिष्ट परिणाम, इनका भार उन्हें उठाना होगा जो पीछे रहेंगे।"

मरते समय दुर्योधन की मुद्रा निर्भय वीरों की-सी थी। महाभारतकार ने और तो सब स्थलों पर दुर्योधन के माथे पर खूब कालिख पोती है, परन्तु यहाँ उससे पूरा न्याय किया है। लाख पतित हो, पापी हो, दुर्योधन भीरु न था। रण-क्षेत्र में अपनी जान हथेली पर लिये-लिये फिरा था। सन्धि के प्रस्तावों को जैसे युद्ध के पूर्व ठुकरा देता रहा था, युद्ध के बीच में-ऐसे क्षणों में भी जब उसके पक्ष की स्पष्ट पराजय हो रही थी-उसी शान से रद्द कर देता रहा। विपक्षी की कृपा का भिक्षुक होने के स्थान में प्राणोत्सर्ग इसे अधिक इष्ट रहा। योद्धाओं की दृष्टि में यह वृत्ति, वीर-वृत्ति है और उस समय के क्षत्रियों में प्रचलित विश्वास के अनुसार यदि किसी शठ में भी यह मनोवृत्ति पाई जाय तो वह भी रण-भूमि में खेत रहा सीधा स्वर्ग को सिधारता है। दुर्योधन के सिर पर महाभारतकार ने इस समय आकाश से फूलों की वर्षा कराई है। उसे स्वर्ग ले-जाने को देवोचित विमान ला खड़ा किया है। गन्धर्वों और अप्सराओं द्वारा स्वर्ग जाते वीर की स्तुति कराई है। शूर-शठ दुर्योधन की यह ठाठ-बाट की मौत देख कुछ समय तो पाण्डव, कृष्ण और सात्यकि खिसियाने रह गए। उन्हें इस बात की लज्जा रही कि कुछ हो, इस आततायी ने अपनी निर्भीकता के कारण अन्तिम श्वासों में ही वीरगति प्राप्त कर ली है और हम सत्य और न्याय का पक्ष लेकर भी अभी उससे वंचित रहे। ❁❁❁

महापुरुषों की जयन्ती

दादाभाई नारोजी	4 सितम्बर
डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन्	5 सितम्बर
भारतेन्दु हरिश्चन्द	9 सितम्बर
पं0 गोविन्दवल्लभ पंत	10 सितम्बर
विनोवा भावे	11 सितम्बर
मैडम भिकाजी कामा	24 सितम्बर
पं0 दीनदयाल उपाध्याय	25 सितम्बर
शहीद भगतसिंह	28 सितम्बर

5 सितम्बर	शिक्षक दिवस
14 सितम्बर	हिन्दी दिवस

महापुरुषों की पुण्यतिथि

यतिन्द्रनाथ दास	13 सितम्बर
गुरु विरजानन्द दण्डी	14 सितम्बर
गुरु नानकदेव	27 सितम्बर
राजा राममोहन राय	27 सितम्बर

पाठकों से निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के पाठकों से निवेदन है कि वर्ष 2014 का वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रुपये शीघ्र ही 'सत्य प्रकाशन' के पते पर तपोभूमि कार्यालय को भेजकर जमा करायें ताकि पत्रिका सुचारू रूप से आपको प्राप्त होती रहे।

—व्यवस्थापक

गतांक से आगे–

क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योग

लेखकः डॉ० सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

विनोबा द्वारा द्रष्टा अनुमन्तादि का विवेचनः–

मोक्ष तक किस प्रकार पहुँचा जा सकता है? इस मार्ग पर चलने वाले की परमात्मा कैसे सहायता करता है? इसका विवेचन करते विनोबा भावे ने लिखा है। गीता के (13–22) श्लोक में आये हुए–**द्रष्टा अनुमन्ता** आदि शब्दों की व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं कि जब मनुष्य आत्मिक विकास के पथ पर चलना प्रारम्भ करता है तो परमात्मा उसको **द्रष्टा** बनकर देखता है। जैसे छोटा बच्चा खड़े होकर चलने लगता है तो मां उसे खड़ा करके देखती है। बच्चा चलने का यत्न करता है, एक दो कदम उठाकर चलता है मां की निगाहें बच्चे की ओर रहती हैं। जैसे ही बच्चा गिरने लगता है कि मां तुरन्त उसे संभाल लेती है। वैसे आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले साधक को परमात्मा संभालता है। जब चलने लगता है तो उसे संभालता ही नहीं अपितु प्रोत्साहित करता है, शाबाशी देता है। जैसे चलनेवाले, दौड़ने वाले बालक को दौड़ता या चलता हुआ या किसी गानेवाले या भाषण देनेवाले बालक को गाने या भाषण देने पर प्रोत्साहित किया जाता है। उसके उत्साह को बढ़ाने के लिये आवाज देकर, ताली बजाकर, पुरस्कार देकर उसको प्रोत्साहित करते हैं, उत्साह को ब्रढ़ाते हैं। वैसे ही परमात्मा **'अनुमन्ता'** होकर अर्थात् उसके आध्यात्मिक पथ का अनुमोदन करता है। उसके उत्साह को बढ़ाता है। चाहे दुनिया के लोग उस कार्य को अच्छा नहीं बतलाते, किन्तु आत्मा के अन्दर से उसको प्रेरणा मिलती है। तब पता लगता है कि परमात्मा अनुमोदन कर रहा है वह **'अनुमन्ता'** है।

जब साधक आध्यात्मिक पथ पर चलते चलते थक जाता है, या कठिनाई अनुभव करता है, तब परमात्मा **'भर्ता'** रक्षक बनकर उसकी उस मार्ग में हर प्रकार से रक्षा करता है। सारी दुनियां जब साथ छोड़ दे और कोई सहारा न दिखलाई दे, तब भक्त भगवान् को पुकारता है। तब अचानक वह महान् शक्ति दुःख के सागर से उसे निकाल लेती है। जब सहायता प्राप्त करके आध्यात्मिक पथ का पथिक निरन्तर आगे बढ़ता जाता है और सफलता की चरम सीमा पर पहुँचता है तब वह अपने सारे कर्मों के फलों को प्रभु को अर्पण कर देता है। समर्पण कर कहता है कि हे भगवान् जो भी कुछ हैं यह सब आपका है। उसे ऐसा अनुभव होता है कि मानो वह फल का भोक्ता नहीं अपितु उसके किये कर्मों का भोक्ता तो प्रभु ही है। उसी का दिया हुआ प्रसाद मैं स्वीकार कर रहा हूँ। ऐसे ही भावविभोर होकर भक्त अपनी भक्ति की उच्च पराकाष्ठा में कहता है कि, **'त्वदीयं वस्तु गोविन्द! तुभ्यमेव समर्पये'**।

इस प्रकार परमात्मा उसके लिये **उपद्रष्टा–अनुमन्ता–भर्ता** और **भोक्ता** बनकर उसको परम धाम मोक्ष पहुँचाता है। ❁❁❁

गतांक से आगे–

इस्लाम कैसे फैला

लेखकः– प्रीतम अमृतसरी

त्वारीखि वस्साफ (लेखक: अब्दुल्ल: वस्साफ शीराजी)

पाठकवृन्द! अब हम आपको जरा पुराने इतिहासों का दिग्दर्शन कराना चाहते हैं जिससे आप को भली भांति विदित हो जायगा कि इस्लाम का प्रसार भारतवर्ष में किन उपायों से किया गया।

सोमनाथ विजय

जब देहली नरेश, सुल्तान अलाउद्दीन, अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर भली भांति राज्य स्थापित कर चुका था, तो उसके हृदय को मजहबी तअस्सुब की कालिमा ने कलुषित किया। उसके मन में विचार हुआ–'कि संसार से 'कुफर' का अस्तित्व ही नाश कर दिया जाय, और तभी हो सकता है यदि हिन्दुओं के धर्म पर प्रहार करते हुए उनकी देव मूर्तियों को नष्ट भ्रष्ट किया जाय। चुनांचि मुल्तान के भाई अलिक मुअजिजुद्दीन नुसरत खान कमान्दार को इस मुहिम्म पर भेजा गया। "केवल जहाद की खातिर न कि मुलक ही हवस से उसने 14000 अश्वारोही और 20000 ही सिपाही भर्ती किये। सफर करते–2 वे कम्बायत में पहुँचे। उन शूर वीरों ने मूर्त्ति–पूजकों को सोते बैठे जा लिया यहां तक कि उनकी सट्टी पट्टी भूल गई। गाजी लशकर ने अत्यन्त निर्दयता से कतल व खून आरम्भ किया। और यह सब कुछ केवल इस्लाम की खातिर हुआ।" रक्त की नदियां चल पड़ीं। उन्होंने सोना, चांदी, हीरे, मोती, पन्ने और अनेक प्रकार के बहुमूल्य पत्थर लूटे; और रूपवती स्त्रियां, बालक और बालिकायें भी उड़ाईं; जिनकी संख्या 20000 तक पहुँचती है। यहां तक लूट मचाई गई "जिसके उल्लेख करने की शक्ति लेखनी में नहीं है।" बात यह कि मुसलिम फौजों ने देश को पूर्ण रूपेण नष्ट किया, अधिवासियों की हत्या की, नगरों को लूटा, आर्य सन्तानों को बन्दी बनाया, बहुत से मन्दिरों की मूर्तियों को तोड़ा और उन्हें पद–दलित किया; सोमनाथ की प्रतिमा को बिध्वंस करके समस्त हीरे तथा जवाहिरात लूट लिये गये। इस मूर्त्ति के भग्नांश देहली ले जाये गये और जामे मस्जिद के द्वार पर इस उद्देश्य से गाड़ दिये गये ताकि "लोग इस विजय को स्मरण रक्खें।"

इन दिनों अर्थात् 1307 ई0 में अलाउद्दीन सकल देश का अधिपति माना जाता है। उसके राज्य के इर्द गिर्द 'काफिर लोग' रहते हैं। उन पर आक्रमण करके और लूट के माल से लदे हुए वापस लौटना वह धर्म समझता है।

अलाउद्दीन के समय में एक मुगल अली बेग नामी भारतवर्ष पर चढ़ आया और बदायूँ के पास डेरे डाल बैठा। सुल्तान ने अपने जैनरल हजार दीनारी मलिक काफूर को 80000 रसाला देकर शत्रु सयुद्ध करने को भेजा। जब इस्लामी फौजें" दुश्मन से इतनी दूर रह गईं जो कि एक दिन का सफर था तो उन्होंने रात्रि ही में शत्रु दल पर छापा मारा। अलीबेग तथा अन्य मुगल सेनापति बन्दी बनाये जाकर देहली ले जाये गये।

सुलतान अलाउद्दीन ने आज्ञा दी कि "कैदियों के समक्ष इस्लाम और तलवार रक्खो। उन्हें जो स्वीकृत हो मानलें' वे विचारे क्योंकि दीन तथा असहाय अवस्था में थे और शत्रु के हाथ में कैदी बन चुके थे, इस कारण उन्हें अपना धर्म छोड़कर कलमः पढ़ना पड़ा और वे इस प्रकार मुसलमान हो गये।

अलाउद्दीन ने अली बेग का बहुत मान किया और उसे अपने अमीरों में सम्मिलित कर लिया। युद्धानन्तर मृत पुरुषों के शिरों की संख्या लेने को विशेषतया हिन्दुओं को नियुक्त किया गया और ज्ञात हुआ कि 60000 सैनिक मारे गये हैं। उन शिरों से एक मीनार बनाया गया ताकि आइन्दः नसलों को याद रहे।

तीरीखि गुजीद

"महमूद गजनवी अत्यन्त कुरूप था एक दिन उसने अपना रूप शीशा में देखा तो उसका दिल गोया बैठ गया।"

सीस्तान का हाकम खलफ वल्द अहमद था। उसने हज्ज पर जाते हुए अपने बेटे ताहर को सिंहासन पर बिठा दिया, परन्तु वापस आकर उसने पुनः राजगद्दी संभालने का प्रयत्न किया और अपने पुत्र को मार दिया। इस उपद्रव का प्रतीकार लेने के लिये महमूद ने 394 हिजरी में सीस्तान पर आक्रमण किया। खलफ भागा और ताक नामी दुर्ग में जा छिपा। महमूद ने वहां भी उसका पीछा न छोड़ा। किला पर हमला करके उसे ले लिया। खलफ ने इल्क खान की सहायता से कुछ देर पीछे विद्रोह आरम्भ कर दिया। महमूद ने यह सुना और उसे सीस्तान के तख्त से उतार दिया। उधर भाटिया और मुलतान को विजित कर इल्क खान के साथ सन्धि कर ली। कुछ चिर के उपरान्त उसने प्रतिज्ञा पत्र का उल्लंघन किया और रणभूमि में उतर आया; परन्तु वहां भी उसकी पराजय ही हुई। तत्पश्चात् सुल्तान महमूद ने मुलतान के हाकम के भानजे पर चढ़ाई की, उसे मार दिया, उस प्रदेश पर अपना अधिकार (कब्जा) कर लिया और **बाशिन्दागान् को मुसलमान बना लिया।'**

तदनन्तर सुल्तान महमूद ने गौरी खानदान के विरुद्ध चढ़ाई की जो कि काफिर थे। उनका हाकम सूरी मारा गया और उसका पुत्र कैदी बना। सुलतान से दुःखित होकर उसने भी आत्मघात कर लिया। गौर प्रदेश सुल्तान के राज्य में सम्मिलित हुआ और "तद्देश निवासी मुसलमान बना लिये गये।'

उसके बाद उसने भीम के किला पर हमला किया और विजय प्राप्त की। सहस्रों देव मूर्तियां तोड़ कर सोना चांदी लूटा। एक सोने की मूर्ति गजनी में इसलिये ले जाई गई कि वहां की एक मस्जिद की सजावट के काम आये।

त्वारीखि अलाई (लेखकः अमीर खुसरो)

अलाउद्दीन खिलजी ने सोमनाथ पर हमला करने के लिये उलग खान को भेजा। 20 जमादीउल अब्बल 698 हिजरी को उसने सोमनाथ के तमाम मन्दिरों को तोड़ा और सब से बड़ा बुत मुलतान के दरबार में पहुँचाया। **बुत्तपरस्ती के इस पुराने मर्कज में बांग इस जोर से दी गई कि वह मिश्र मक्का और मदीना तक सुनी गई।**

सन् 700 हिजरी को रत्न अम्बोर का मजबूत कोट जीता। झांई नामी दुर्ग भी ले लिया गया। यह मूर्त्ति पूजा का पुराना केन्द्र था। बाहीर देव का मन्दिर तथा अन्य देवताओं के स्थान गिरा दिये गये।

अलाउद्दीन अपनी अन्य विजयों के पश्चात् मालाबार को फतह करने के विचार में निमग्न हुआ; क्योंकि कोई भी मुसलमान विजयी वहां तक न पहुँच सका था। उसका ख्याल था कि जिस प्रकार भी हो सके वहां इस्लाम की ज्योति को पहुँचाया जाय। मलिक नाइब बारबक को सेना–पति बनाया गया। नवम्बर 1310 ईस्वी अर्थात् 24 जमादीउल–अब्बल 710 हिजरी को सेनाओं ने देहली से प्रस्थान किया। लम्बा सफर करके 'गाजी सेनाऐं' जलाल राव के देश में पहुँचीं। जब अग्नि–पूजक राव ने यह समाचार सुना कि उसके इष्ट देव का मन्दिर शीघ्र ही मस्जिद में पविर्त्तित कर दिया जायगा, तो उसने 'कीसू' को भेजा ताकि इस्लामी दल का अनुमान कर सूचना दे। परन्तु जब उसने और भी चिन्ताप्रद वृत्तान्त सुनाया, तो राय ने भयभीत होकर समस्त सम्पत्ति सुवर्ण, धन, हस्ती, घोड़े पेश करना स्वीकार करते हुए हार मान ली। परन्तु बादशाह के सेनापति ने प्रत्युत्तर में कहा **"कि हमें तो इसलिये आक्रमण करने की आज्ञा हुई थी कि तुम्हें मुसलमान बना लें, या जिम्मी बना जाय और यदि ये शर्तें पूर्ण न करो तो कत्ल कर दें"** इस पर राव ने और सब कुछ स्वीकार कर लिया; परन्तु पवित्र वैदिक धर्म से च्युत न हुआ।

वहां से ये सेनायें वीर धूल की ओर बढ़ीं। और लूट खसूट तथा स्थान–2 पर मनुष्य वध करती फिरीं। राव वीर भयभीत होकर भाग निकला; परन्तु मलिक ने उसका पीछा न छोड़ा। बढ़ते–2 वह (मलिक) कन्दूर पर उन मुसलमानों से मिला, जो कि हिन्दुओं की प्रजा थे। ये लोग वहां रहते आधे हिन्दु से हो गये थे और हिन्दुओं की सी ही रसमें पूरी करने लग गये थे। यहां तक कि मुहम्मदी शरअ (इस्लामी कानून) से नितान्त अपरिचित हो चुके थे; परन्तु उन्हें कलमा शरीफ पढ़ना आता था। **केवल इसीलिये वे 'कतलि–आम' से बचे रहे** वीर भाग निकला और काबू न आया। उसे ढूँढ़ते–2 मलिक ने ब्रह्मस्तपुरी पर आक्रमण किया, जहां से 250 हाथी प्राप्त हुए। उसने उस **विशाल देव मन्दिर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, और लिंग महादेव की तमाम मूर्त्तियां तुड़वा दीं। इस प्रकार बीर धूम में** जितने भी मन्दिर थे सब तबाह कर दिये गये।

त्वारीखि फीरोज शाही (लेखक: जिआउद्दीन बरनी)

सन् 691 हिजरी (1292 ईस्वी) में हलाकूखान के पोते अब्दुल्ला ने आर्यावर्त्त पर चढ़ाई की। उसके पास 150000 मुगल सैनिक थे। सुल्तान जलालुद्दीन ने अपनी सेनाओं को एकत्रित करके देहली से प्रस्थान किया। दोनों सेनाओं का घोर युद्ध हुआ। मुसलमानों (जलालुद्दीन की) विजय हुई। और कुछ (मुगल) कैदी उनके हाथ लगे, जो कि सुल्तान के समक्ष भेजे गये। एक बार फिर सामना हुआ। मुगल हार गये। बहुत से मारे गये और कई कैदी हुए। सन्धि का परामर्श होते ही युद्ध समाप्त हो गया। सुलतान और अब्दुल्ला की मुलाकात हुई। सुल्तान ने अब्दुल्ला को पुत्र, और अब्दुल्ला ने सुल्तान को पिता कहकर पुकारा। अब्दुल्ला, मुगल सेनाओं को लेकर वापस चला गया; परन्तु 'उलग खान' जो कि चँगेज खाँ का पोता था बहुत से अमीरों वजीरों समेत भारतवर्ष में ही रह गया। **सुल्तान जलालुद्दीन की एक पुत्री का विवाह उसके साथ किया गया अतः वह मुसलमान हो गया।** उनमें से बहुत से तो जलवायु के प्रतिकूल होने के कारण वापस लौट गये; परन्तु जो पीछे रह गये वे मुसलमानों में हिलमिल गये और उन्हें 'नौ मुसलिम' का उपनाम दिया गया।

हिन्दुओं को पीस डालने का षड्यन्त्र

आन्तरिक विद्रोहों का दमन करके, सुल्तान अलाउद्दीन ने बुद्धिमान् मन्त्रियों से निवेदन किया कि

कोई ऐसे नियम बनाये जाँय जिनके द्वारा हिन्दुओं को सर्वथा कुचलकर, उन्हें अपने धन ऐश्वर्य से वंचित कर दिया जाय। एक नियम तो ऐसा बनाया जाना चाहिये जो सारी प्रजा के लिये एक समान हो, और दूसरा ऐसा, जिससे **हिन्दुओं को ऐसा विवश कर दिया जावे कि वे सवारी के लिये घोड़ा, आत्मरक्षा के लिये शस्त्र, और तन ढाँपने को सुन्दर वस्त्र भी प्राप्त न कर सकें।** सुल्तान के इन दोनों प्रस्तावों को कार्य रूप में परिणत करने के लिये दो कानून बनाये गये।

(1) ''काश्त के बाद उत्पत्ति का अर्धभाग बिना हील व हुज्जत, बिना कमीबेशी के सरकारी कोष में जमा करना पड़ता था।

(2) भैंसों, बकरियों और दूसरे दूध देने वाले जानवरों के मुतअल्लिक था। चरागाहों पर एक कर लगाया गया था। प्रत्येक घर से यह कर प्राप्त किया जाता था, जिससे कोई भी पशु चाहे वह कैसा भी रद्दी क्यों न हो बच नहीं सकता था।'

इन नियमों पर ऐसा कड़ा आचरण किया जाता था कि 'चौधरी' और 'मुकद्दम' भी घोड़ों पर न चढ़ सकते थे, न शस्त्र खरीद सकते थे, न अच्छे कपड़े धारण कर सकते थे, और यहां तक कि पान भी न खा सकते थे। **इस तरीका से कोई भी ऐसा हिन्दु न मिलता था जिसके घर में सोने, चांदी का निशान भी मिल सकता।**

सुल्तान ने काजी मुगीसुद्दीन से प्रश्न किया कि हिन्दुओं के साथ शरआ मुहम्मदी के अनुसार कैसा वर्ताव होना चाहिये **काजी ने कहा कि हिन्दुओं को शरअ शरीफ में खिराज गुजार कहा गया है, और जब कर संग्रह–कर्त्ता उनसे चाँदी माँगे तो उन्हें चाहिये कि सोना देदें। यदि उक्त अफसर उनके मुँह में मट्टी डाले तो, उन्हें उचित है कि बिना सँकोच मुँह खोल रक्खें। हिन्दुओं को अपमानित करना एक विशेष 'इस्लामी फर्ज' है क्योंकि वे रसूलुल्ला के सबसे बड़े विरोधी हैं और क्योंकि रसूलुल्ला ने उनको लूटने, कत्ल करने या कैद करने की यह कहते हुए आज्ञा दे रक्खी है 'कि उन्हें मुसलमान कर लो या कतल कर दो। उन्हें कैद कर लो और उनकी सम्पत्ति लूटलो।'**

मन्दिरों को तोड़ना

सन् 700 हिजरी (1310 ई0) सुल्तान ने मलिक नाइब काफूर को धूर समुद्र और मालाबार के विरुद्ध चढ़ाई करने की आज्ञा दी। ख्वाजा हाजी को साथ लेकर मलिक नाइब देवगीर को गया। वहां का राजा रामदेव मर चुका था।........ पहले ही हमले में बलालराव मुसलमानों के हाथ आ गया, और धूर समुद्र पर कब्जा कर लिया गया। बहुत सी धन दौलत के अतिरिक्त असंख्य हस्ती तथा घोड़े हाथ लगे। सुवर्ण मूर्त्ति का मन्दिर भी नष्ट कर दिया गया, जो कि शताब्दियों से हिन्दुओं का पूजा स्थान बना हुआ था।

तुगलक शाह

सुल्ताननुल्मुजाहिद, अब्बुलफतह मुहम्मद शाह इब्न तुगलक शाह ने फिर सन्नाम और सामान पर हमला किया। सुल्तान ने (वहां जाकर) उनके मन्दिरों को तबाह कर दिया, उनसे सम्बन्धित पुरुषों को भगा दिया, और अफसरों को कैद करके देहली ले आया। उनमें से **बहुत से तंग आकर मुसलमान हो गये।**

❀❀❀

गतांक से आगे–

वेदकालीन पर्व पद्धति

लेखकः – उदयनाचार्य, निगमनीडम्–वेदगुरुकुलम्, पिडिचेड, गज्वेल, मेदक (आं. प्र.)

शारदेनऽऋतुना देवाऽएकविंशऽऋभव स्तुताः।
वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्रे वयो दधुः॥ –(यजु. 21.26)

जैसे शरद् ऋतु वर्षा ऋतु के मेघों को छिन्न–भिन्न कर आकाशादि को निर्मल बनाता है, जल को शुद्ध करता, अन्न और फलों की वृद्धि करता है, वैसे ही ऋभव देव अर्थात् ज्ञानज्योति से प्रदीप्त अन्तः करणवाले (ऋतेन भान्ति, ऋतेन भवन्तीति वा निरुक्त 11.16) मेधावी जन वा ऋतु में ही रमने वाले विद्वान् 21 तत्वों (संवत्सर के 12 मास, 6 ऋतु एवं 3 लोक–द्र0 ऐ0 ब्रा0 1.30, श0 ब्रा0 1.3.5.11) को जानकर लोगों में व्याप्त मेघरूपी आसुरीभावों को विनष्ट कर उनमें ज्ञानज्योति को प्रदीप्त कर उनके अन्तकरणः को पवित्र बनाते हैं और उन्हें सुख शान्ति से परिपूर्ण कर देते हैं। इस प्रकार अपने जीवन में शरद् ऋतु को लाने वाले वे विद्वान् जनता में अत्यन्त प्रशंसित होते हैं तथा विशेषरूप से प्रकाशित ऐश्वर्य को एवं ग्रहण करने योग्य दीर्घ जीवन को प्राप्त होते हैं।

हेमन्तेनऽऋतुना देवास्त्रिणवे मरुत स्तुताः।
बलेन शक्करीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः॥ –(यजु. 21.27)

हेमन्त ऋतु अपने तीव्र शीत से प्राणियों को कष्ट देता है। और जल–प्रवाह को संकुचित करता है, वैसे ही मरुत् देव अर्थात् ऋत्विग्गण व याज्ञिक लोग (मरुत् इति ऋत्विङ्नाम–नि0 2, 19) अपनी और यजमानों की दुर्भावनाओं के प्रति अत्यन्त कठोरता दिखाते हैं और अपने एवं यजमानों के मानसिक प्रवाह को, चंचलता को संकुचित करते हैं, अंकुश लगाते हैं अर्थात् वे देव अपने जीवन में हेमन्त ऋतु को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार वे (त्रिणव) धर्म, अर्थ, कामों में उत्तम गतिवाले होते हुए या ज्ञान, कर्म, उपासनाओं में स्तुत्य होते हुए लोक में प्रसिद्धि को पाते हैं। तत्परिणामतः वे ग्रहण करने योग्य बल, शक्ति–सामर्थ्य, सहनशीलता को धारण कर सार्थक जीवन वाले होते हैं।

शैशिरेणऽऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशेऽमृताऽस्तुताः।
सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः॥ –(यजु. 21.28)

जैसे शिशिर ऋतु वृक्षों के पत्तों को गिरा कर नये पत्तों को उत्पन्न करने के निमित्त वृक्षों में नये रस का सिंचन करता है, वैसे ही अमृत देव अर्थात् विषय–वासनाओं के पीछे न मरने वाले विद्वान् व रोगों से आक्रान्त न होने वाले मनीषी भी अपने सभी बन्धनों को शिथिल कर अपने में अमरत्व को प्राप्त करने में समर्थ रस का, शक्ति का सिंचन कर अपने जीवन में शिशिर ऋतु को लाते हैं। इस प्रकार वे अपने

मस्तिष्करूप द्युलोक, हृदयरूप अन्तरिक्षलोक एवं अवशिष्ट शरीररूप पृथिवीलोक में ग्यारह-ग्यारह देवों (दिव्यगुणों) को धारण कर अपने शरीर को तैंतीस देवों के निवास से देवपुरी बना लेते हैं। जिससे वे अत्यन्त स्तुत्य बनते हैं। वे सत्य के मार्ग से ही धनाद्यैश्वर्यों को प्राप्त करते और आत्मिक बल, अन्न एवं उत्कृष्ट जीवन को भी प्राप्त करते हैं।

ऋतवस्तऽऋतुथा पर्व शमितारो वि शासतु।
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा।। -(यजु. 23.40)

गत मन्त्रों में वर्णित (ऋतुथा) ऋतुओं के अनुकूल आचार, विचार, व्यवहार करने से वे ऋतुवें और ऋतुओं के पर्व (सन्धिकाल) दिव्यता एवं स्वस्थता के अभिलाषियों को शान्ति प्रदान करनेवाली होकर मार्गदर्शक बनती हैं। अभीष्ट कामना को प्रदान करने में समर्थ संवत्सर की तेजस्विता से एवं ऋत्वनुकूल कर्मों (शमी कर्माणि-निघ0 2.1, निरु0 11.16) से तुझे सुख और शान्ति प्राप्त हों।

अर्धमासाः पंरूषि ते मासाऽआच्छ्यन्तु शम्यन्तः।
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टं सूदयन्तु ते।। -(यजु. 23.41)

शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष और उनके पर्व (संन्धियाँ) एवं मास तुझे शान्ति प्रदान करते हुए आत्मिक, मानसिक और शारीरिक दोषों को दूर करें। दिन-रात अर्थात् सदा ही ये सभी प्रकार के प्राण ऋत्वनुकूल चलने वाले की न्यूनताओं को नष्ट करें।

अन्त में पर्व की इतिकर्तव्यता वा सार्थकता का बोध कराने वाले मन्त्र को उद्धृत कर अपने विचारों को विराम देते हैं-

यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु।। -(ऋ. 7.103.5)

गुरुजनों के सान्निध्य में रहकर ब्रह्मचारी (ब्रह्म में विचरने वाला शिष्य) पूर्ण विद्वान् होकर, ज्ञानी, विवेकी बनकर प्रजाओं में व अपने शिष्यों में गुरुजनों से प्राप्त वेदज्ञान को और (पर्व) पालन करने योग्य ब्रह्मचर्यादि व्रत आदि को परिव्याप्त करें अर्थात् वेदज्ञान का प्रचार-प्रसार करना प्रत्येक मनुष्य का पर्व (पालन करने योग्य) है, कर्तव्य है। ❋❋❋

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका मंगाने हेतु
एक वर्ष के लिए 150/- एक सौ पचास रुपये वार्षिक शुल्क,
पन्द्रह वर्ष के लिए 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये
आज ही भेजिये।

सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

षोडश कला

लेखकः महात्मा ओमुनि, शेखपुरा, जिला–हिसार (हरि०)

कुछ वर्ष पूर्व रेलगाड़ी से यात्रा करते समय मुझे दो पौराणिक पण्डितों की, षोडश कला अर्थात् सोलह कला सम्पूर्ण पुरुष सम्बन्धी वार्तालाप सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उनमें से एक पण्डित कह रहा था कि भगवान् विष्णु के अवतारों में केवल भगवान् श्री कृष्ण की सोलह कला सम्पूर्ण थे, और भगवान् श्रीराम केवल बारह कला सहित भगवान् विष्णु के अवतार थे। मैंने जिज्ञासावश यह प्रश्न उनसे पूछ लिया कि पण्डितजी ! भगवान् श्रीकृष्ण को सोलह कलाधारी और भगवान् श्रीराम को केवल बारह कला सम्पन्न आप क्यों बता रहे हैं, जबकि दोनों को ही आप भगवान् विष्णु का अवतार मानते हैं।

तब उस पण्डित ने अपने पौराणिक ज्ञानानुसार बताया कि भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्रवंशी थे, इसलिए वे सोलह कला सम्पन्न पुरुष कहलाते हैं, क्योंकि चन्द्रमा की सोलह कलायें होती हैं। भगवान् श्रीराम सूर्यवंशी होने के कारण बारह कलाधारी हैं, संवत्सर के बारह मास सूर्य की बारह कलाएं हैं। इसके साथ उन्होंने एक बात और सुनाई कि सोलह कलापूर्ण भगवान् विष्णु के अवतार के पास सुदर्शन नामक दिव्यास्त्र होता है, जो भगवान् श्रीकृष्ण के पास था किन्तु श्रीराम के पास नहीं था। मेरे मस्तिक में कुछ प्रश्न उमड़–घुमड़ रहे थे कि सूर्य और चन्द्रमा तो जड़ पदार्थ हैं, भला इनसे कोई मानव वंश कैसे चल सकता है? और भी कई प्रश्न...... किन्तु गन्तव्य स्टेशन आने के कारण मुझे गाड़ी से उतरना पड़ा और यह षोडश कला सम्बन्धी वार्तालाप भी वहीं छूट गया।

कुछ समय पश्चात् जब मैं एक दिन प्रश्नोपनिषद् का स्वाध्याय कर रहा था तब मुझे इस षोडश कला का रहस्य ज्ञात हुआ। पौराणिक जगत् में तो न जाने ऐसी कितनी अज्ञान व अविद्या से भरी कथायें प्रचलित हैं। प्रश्नोपनिषद् में एक प्रसंग के अनुसार महर्षि पिप्पलाद के पास छः जिज्ञासु ब्रह्मचारी अपनी–2 शंकाओं के समाधान हेतु पहुँचते हैं उनमें से एक जिज्ञासु भारद्वाज गोत्री ब्रह्मचारी सुकेश ने महर्षि पिप्पलाद से पूछा कि–'हे भगवन्! वह षोडश कला पुरुष कौनसा है?'

तब महर्षि पिप्पलाद ने कहा कि हे प्रिय शिष्य! वह पुरुष कहीं दूर नहीं रहता, वह शरीर के भीतर ही है, जिसके भीतर यह षोडश कलाएं उत्पन्न होती हैं। ऋषि के अनुसार पुरुष से अभिप्राय जीवात्मा और परमात्मा दोनों ही हैं। क्योंकि जीवात्मा और परमात्मा दोनों ही इस शरीर में रहते हैं। परमात्मा तो इन षोडश कलाओं को उत्पन्न करता है और जीवात्मा इन कलाओं से काम लेता है।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि ये षोडश कलायें हैं कौन–कौन सी और इनकी गणना किस कला से प्रारम्भ होती है अर्थात् इनमें प्रथम कला कौनसी है?

इसके समाधान के लिए ऋषि ने बताया कि जिस कला के शरीर से बाहर निकलने पर जीवात्मा

को भी विवश होकर शरीर छोड़ना पड़े और मनुष्य की मृत्यु हो जाये, वह प्रथम कला है। अब परीक्षण प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम नेत्रों ने शरीर को छोड़ा, तब शरीर ऐसे ही चलता रहा जैसे अन्धे व्यक्ति का जीवन होता है। आंखों के बाद श्रवण शक्ति ने शरीर को त्यागा तो बहरों की तरह जीवन बिताया किन्तु शरीर में जीवन चलता रहा। इसी प्रकार बारी-बारी सभी ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियाँ शरीर से अलग होती रही और शरीर में उनसे सम्बन्धित दोष आते रहे, किन्तु शरीर में जीवन चलता रहा। अन्त में जब प्राण ने शरीर से निकलने का प्रयत्न किया तो सबके खूंटे उखड़ने लगे और जीवात्मा सहित सभी इन्द्रियाँ निढाल और बेवस होने लगी। क्योंकि प्राण निकलने से शरीर की मृत्यु निश्चित है।

अतः सर्वव्यापक परमात्मा ने सर्वप्रथम क्रिया के लिए प्रथम कला के रूप में प्राणों को उत्पन्न किया, क्योंकि क्रिया के बिना कोई वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती। फिर दूसरी कला प्राण से श्रद्धा उत्पन्न हुई, श्रद्धा से आकाश तीसरी, आकाश से वायु चौथी, वायु से अग्नि पांचवीं, अग्नि से जल छटी, और जल से पृथिवी सातवीं कला के रूप में उत्पन्न हुई। इन पाँच महाभूतों के पश्चात् इनके गुणों को धारण करने वाली इन्द्रियाँ और इनको नियम में चलाने वाला मन उत्पन्न हुआ। इस प्रकार प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि, इन्द्रियाँ और मन ये नौ कलायें हुई।

अब आगे मन को शक्ति प्रदान करने के लिए अन्न दसवीं कला और अन्न से वीर्य ग्यारहवीं कला उत्पन्न हुई। वीर्य से शरीर की रचना होने के पश्चात् मनुष्य शारीरिक व मानसिक तप करता है। अतः तप बारहवीं कला हुई। शारीरिक तप से उत्पन्न होने वाली कला का नाम कर्म है, जो तेरहवीं कला है। मानसिक तप/कार्य से उत्पन्न होने वाली चौदहवीं कला को विचार अर्थात् मन्त्र कहा जाता है। कर्म और मंत्र के अतिरिक्त नाम व रूप दो कलाएं हैं। रूप को लोक कहा जाता है, जो पन्द्रहवीं कला है और नाम सोलहवीं कला है।

इस प्रकार महर्षि पिप्पलाद कहते हैं कि जिस प्रकार रथ के पहिये की नाभि में आरे लगे होते हैं, इसी प्रकार जिस पुरुष में सब कलायें विद्यमान हैं, जिसके बिना कोई कला रह नहीं सकती, उस जानने योग्य परमात्मा को जानो और उसे जानकर ही मनुष्य मृत्यु के भय से मुक्त को जाता है।

इति ओ३म् शम्

पुस्तकों के प्रति

1– मैं अच्छी पुस्तकों का स्वर्ग में भी स्वागत करूँगा क्योंकि वे जहां होगी वहां आप ही स्वर्ग हो जायेगा। **–पं0 लोकमान्य तिलक**

2– पुस्तक प्रेमी सबसे धनी व सुखी हो सकता है। **–मनु.**

3– पुस्तकें वे दर्पण हैं जिनमें सन्तों तथा वीरों के मस्तिष्क हमारे लिए प्रतिबिम्ब होते हैं। **–गिबन**

4– अच्छी पुस्तक एक महान आत्मा का अमूल्य जीवन रक्त है। **–मिल्टन**

आज का चाणक्य, योगीराज बाबा रामदेव

लेखकः– खुशहालचन्द्र आर्य, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकता

मगध का राजा नन्द ने महात्मा चाणक्य जो उसका महामंत्री था, उसका अपमान करके अपने राज्य से निकाल दिया था। तब चाणक्य ने अपनी चोटी खोलकर प्रतिज्ञा की थी कि मैं नन्द के राज्य का विनाश करके ही अपनी चोटी को गांठ लगाऊँगा, तब तक मेरी चोटी खुली ही रहेगी और उसने वैसा ही कर दिखाया।

चाणक्य ने सोचा कि मुझे कोई ऐसा प्रतिभाशाली बालक मिल जाये, जिसको मैं युद्ध–विद्या सिखा कर, दक्ष बना दूँ, फिर उसी के द्वारा राजा नन्द को हराकर उसे मगध का राजा बना दूँ। उसने जब मुरी दाई का लड़का चन्द्रगुप्त को अपने साथियों के साथ राजा–प्रजा का खेल खेलते देखा, जिसमें चन्द्रगुप्त राजा बना हुआ था, उसके राज्य शासन करने का तरीका देखकर तथा उसकी कार्य क्षमता और प्रतिभा देखकर चाणक्य बड़ा प्रभावित हुआ और उस बालक को अपने पास रखने लगा। उसे सब किस्म की युद्ध–विद्या सिखलाकर उसे एक अच्छा योद्धा बना दिया। जनता राजा नन्द के अन्यायों से दुःखी थी, चाणक्य ने उसकी जनता में से ही अच्छे–अच्छे युवाओं को चुनकर एक विशाल सेना तैयार कर ली और चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में राजा नन्द पर हमला कर दिया, नन्द हार गया तब अवध का राजा चन्द्रगुप्त को बना कर, महात्मा चाणक्य स्वयं एक जाल में छोटी सीं कुटिया बनाकर राज्य का नियन्त्रण करने लगा। ठीक उसी भाँति, योगीराज बाबा रामदेव ने भी तीन–चार वर्ष में कांग्रेस सरकार का सफाया करके नरेन्द्र मोदी को भारत का प्रधानमंत्री बनाकर दिखाया।

जब 4 जून सन् 2011 में बाबा रामदेव ने दिल्ली के रामलीला मैदान में कांग्रेस सरकार के विरोध में एक बहुत बड़ा सम्मेलन किया था, जिसमें लाखों लोग शामिल हुए थे। मुझे प्रसन्नता है कि मैं भी इस महासम्मेलन में शामिल हुआ था। उस सम्मेलन में बाबा रामदेव ने कांग्रेस सरकार के अन्याय, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अव्यवस्था, कालाधन, मंहगाई और विदेशी कम्पनियों का बढ़ता हुआ वर्चस्व के बारे में पर्दाफास किया था। तब उसमें कांग्रेसी सरकार ने रात के दो बजे लाखों की संख्या में सोई हुई निरपराध जनता पर पुलिस से लाठी चार्ज करवा दिया जिससे भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में सैकड़ों पुरुष, स्त्रियाँ व बच्चे घायल हो गये और एक हमारी बहन की मृत्यु भी हो गई। बाबा रामदेव किसी प्रकार से जान बचाकर भाग निकले, नहीं तो उनकी जान को खतरा हो जाता। तभी बाबा ने मन में यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मैं इस अन्यायी कांग्रेसी सरकार को जल्दी से जल्दी उखाड़ फेंकूंगा। उसी दिन से बाबा ने अपनी तैयारी करनी आरम्भ कर दी और जगह–जगह अपने योग–शिविर आरम्भ कर दिये जिसमें हजारों नहीं लाखों की संख्या में लोग एकत्रित होने लगे और लोगों को इस सरकार के दोष और

कमजोरियाँ बतलाकर, कांग्रेस सरकार के विरोध में खड़ा कर दिया। इस कार्य में आयुर्वेदाचार्य बालकृष्ण का सहयोग भी इनको इतना अधिक मिला जिससे इनके सभी योग शिविर पूर्ण रूप से सफल होने लगे और देशभर में जागृति आ गई। कांग्रेस सरकार के प्रति लोगों का क्षोभ प्रकट होने लगा और जनता में एक प्रकार का रोष उत्पन्न हो गया। जिससे बाबा रामदेव जहाँ भी योग शिविर लगाते, वहीं लोगों की भीड़ जमा होने लगी। स्वामीजी ने हजारों की संख्या में निःशुल्क स्वयं सेवक तैयार किये जो गाँव–गाँव योग शिविर लगाते और साथ ही देश की बिगड़ी स्थिति के सम्बन्ध में भी बतलाते, पूरा देश कांग्रेस सरकार के विरोध में खड़ा हो गया।

4 जून के बाद बाबा रामदेव ने दो महासम्मेलन 3 जून और 9 अगस्त सन् 2012 में और किये। सौभाग्य से उन दोनों में भी मैं गया था। उनमें भी काफी संख्या में लोग एकत्रित हुए और पूरे देश में कांग्रेस सरकार के विरोध में केवल एक लहर ही नहीं, आँधी सी चल पड़ी। देश के अन्य साधु–संत भी बाबा रामदेव के साथ हो गये। सन् 2012 में इलाहाबाद महाकुम्भ के शुभ अवसर पर हजारों साधु–संत एकत्रित हुए थे, वहाँ बाबा रामदेव की अध्यक्षता में एक सम्मेलन हुआ जिसमें गंगा शुद्धि तथा गोरक्षा के दो मुद्दों को और जोड़कर समारोह में सब बातों पर विचार हुआ जिसमें बी.जे. पी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथसिंह और आर.एस.एस. के प्रमुख मोहन भागवत के शामिल होने से समारोह के और चार चांद लग गये। वहाँ सब साधु–संतों ने मिलकर यह निश्चय किया कि हम इस सरकार के विरोध में घर–घर जाकर अलख जगायेंगे और देश को इस अन्यायी सरकार से मुक्ति दिलायेंगे।

इधर बी.जे. पी. भी कांग्रेस सरकार के विरोध में मोर्चा तैयार कर रही थी, एक ऐसा सेनापति की खोज कर रही थी, जो एक महान् त्यागी, तपस्वी, निःस्वार्थी, साहसी, दृढ़ निश्चयी, चरित्रवान, राष्ट्रभक्त, कर्त्तव्य परायण व सेवाभावी व्यक्ति हो। संयोग से उनको नरेन्द्र मोदी के रूप में एक ऐसा सेनापति मिल गया। जिसमें उपरोक्त गुणों के साथ–साथ बारह साल गुजरात में केन्द्र का विरोध होते हुए भी कुशलता पूर्वक शासन करके वहाँ की जनता का दिल जीत रखा था। बी.जे.पी. के अधिकतर नेता जिनमें विशेषकर बी.जे.पी. के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथसिंह व आर.एस.एस. के प्रमुख मोहन भागवत के सुप्रयास से मोदी को भावी चुनावों में विजयी होने के बाद अपना प्रधानमंत्री भी घोषित कर दिया। इसमें बाबा रामदेव का बहुत बड़ा हाथ रहा जिससे बाबा रामदेव और मोदी जी की नजदीकता भी काफी बढ़ गई कारण कांग्रेस की सरकार को हटाने में दोनों के विचार समान थे इसीलिए इन दोनों का गुरू–शिष्य जैसा सम्बन्ध बन गया और साथ में एक दूसरे के सहयोग से काम करने लगे।

चुनावों की घोषणा होने से पाँच–छः महीना पहले ही बाबा रामदेव ने अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हुए कहा कि मैं हरिद्वार में तभी प्रवेश करूँगा जबकि बी.जे.पी. को पूर्ण बहुमत के साथ जीत हो जाये और नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बना दिये जायें। साथ ही कांग्रेस सरकार का जड़मूल से सफाया हो जाये, तभी मैं हरिद्वार पतंजलि योगपीठ में लौटूँगा। बाबा रामेदव ने पाँच–छः महीनों में अथक

परिश्रम करके सारे भारत में घूम–घूमकर सैकड़ों सभाएँ कीं और भारत की देशभक्त जनता को कांग्रेस के विरोध में खड़ा किया और नरेन्द्र मोदी का समर्थन तैयार किया। इधर नरेन्द्र मोदी ने भी अथक परिश्रम करके पाँच छः महीनों में सैकड़ों सभाएँ कीं जिनमें लाखों लोग जुटते थे और मोदीजी तथा बी.जे.पी. के गगनचुम्बी नारे लगते थे। इन दोनों के प्रयास से सारे भारत का मोदी जी हृदय सम्राट बन गया। ईश्वर की अपार कृपा से तथा बाबा रामदेव और मोदी जी के अत्यधिक प्रयास से चुनावों में बी.जे.पी. की पूर्ण बहुमत से विजय हुई और नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बना दिया गया। इस भारी विजय से बाबा रामदेव की प्रतिज्ञा उसी भांति पूर्ण हुई जिस भांति महात्मा चाणक्य की हुई थी। चाणक्य को सुयोग्य, कुशल नेतृत्व वाला सुशासक चन्द्रगुप्त मिला था वैसा ही बाबा रामदेव को शासन चलाने वाले सभी गुणों से सुसज्जित नरेन्द्र मोदी मिल गये। बी.जे.पी. को भारी बहुमत मिलने से मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाने के बाद बाबा रामदेव ने राजनीति में कोई भाग नहीं लिया और पतंजलि योगपीठ में वही योग दिखाने का काम रखा। इसके लिए बी.जे. पी. के कई नेताओं ने रामदेव जी को महात्मा गांधी व जयप्रकाश नारायण बताया। मैंने इसमें जोड़ते हुए महात्मा चाणक्य भी बताया है। इसमें मैं समझता हूँ कि बाबा रामदेव का सम्मान व गौरव और अधिक बढ़ा है।

ईश्वर की कृपा से देश के अब अच्छे दिन आ गये हैं। अब देश मोदी जी के कुशल नेतृत्व में और बाबा रामदेव की देख–रेख में दिन प्रति–दिन उन्नत व समृद्धिशाली बनेगा। वह दिन दूर नहीं जब मेरा प्यारा देश भारत, विश्व का पथ–प्रदर्शक बनेगा और पूर्व की भांति पुनः **'विश्व गुरू'** कहलायेगा। ✦✦✦

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति

1– महर्षि दयानन्द भारत के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में, श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे। उनका ब्रह्मचर्य, उनकी विचार स्वतंत्रता, उनका सबके प्रति प्रेम, उनकी कार्य कुशलता इत्यादि गुण लोगों को मुग्ध करते थे।

–माता कस्तूरबा बाई

2– दयानन्द तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही साथ ही वे एक युग प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे।

–इंदिरा गांधी

3– यह मुनासिब ही था कि सभी धर्मों के लोग आदर करते थे मैंने यूरोप और इंग्लैण्ड का दौरा किया मुझे अपनी जिन्दगी में दयानन्द जैसी हस्ती देखने को नहीं मिली इनकी मृत्यु से इल्म का सूर्य अस्त हो गया।

–सर सैयद अहमद खां (सम्पादक कोहिनूर पत्रिका)

4– स्वामीजी ने स्वराज्य का जो सबसे पहले हमें संदेश दिया था उसकी हमें आज रक्षा करनी है उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। **–भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

5– इसका श्रेय केवल दयानन्द को ही है कि हिन्दू लोग आधी शताब्दी से ही रूढ़िवादी और पौराणिक देवताओं की पूजा छोड़कर अत्यन्त शुद्ध ईश्वर को मानने लगे हैं।

–प्रिन्सिपल रुद्र

भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ व उपाय क्या है?

लेखकः आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, भागलभीम-भीनमाल (जालोर)राज०

सोलहवीं लोकसभा के चुनाव ने भारत को एक महान् देशभक्त नेतृत्व **श्री नरेन्द्र मोदी** के रुप में प्रदान किया है, जिन्होंने काशी में भारत को जगद्गुरु बनाने की इच्छा का संकेत करते हुए कहा था, **"जब भारत जगद्गुरु था तब काशी नगर राष्ट्रगुरु था और यदि भारत को पुनः जगद्गुरु बनाना है तो काशी को राष्ट्रगुरु बनाना होगा।"** काशी को राष्ट्रगुरु बनने का संकेत स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन वैदिक विरासत व देववाणी संस्कृत भाषा का पुनरोदय होने से ही यह राष्ट्र पुनः जगद्गुरु बन सकता है। इधर श्री मोदी के मन्त्रिमण्डल की एक सदस्या श्रीमती स्मृति ईरानी जिन पर भारत के मानव संसाधान विकास मंत्रालय का बहुत महत्वपूर्ण दायित्व है, ने वैदिक साहित्य पढ़ने की वकालत की है। यह देश के लिए बहुत ही शुभ संकेत हैं। यहाँ कुछ कथित प्रबुद्ध जनों को श्री मोदी के कथनों में परस्पर विरोध प्रतीत हो सकता है। उनकी दृष्टि में मोदी जी एक ओर अत्याधुनिक विज्ञान, तकनीक के द्वारा राष्ट्र को अमेरिका, चीन व यूरोपीय देशों की बराबरी पर लाने की बात करते हैं तो दूसरी ओर वे भारत की प्राचीन परम्परा के पुनरोदय की बात करते हैं। क्या यह परस्पर विरोध नहीं है?

अंग्रेजी भाषा के एकछत्र विश्वव्यापी शासन तथा वर्तमान विज्ञान व टैक्नोलोजी के इस युग में वेदादि की बात करना कहाँ तक युक्ति संगत है, वह भी वेदादि शास्त्र व संस्कृत भाषा के बल पर भारत को विश्व का गुरु बनाने का स्वप्न देखना व दिखाना कहाँ तक उचित है, यह अवश्यमेव विचारणीय है। वर्तमान विश्व में तो दूर की बात है, अपने देश में भी इस प्रकार की बातों पर प्रबुद्ध वर्ग विश्वास नहीं करता। मेरी दृष्टि में इसके दो कारण हैं। प्रथम यह कि **भारत का नागरिक विशेषकर प्रबुद्ध युवा तन से भारतीय तथा मन व आत्मा से पूर्णतः मैकाले का भक्त हो चुका है। उसे भारतीयता की वह कोई बात अच्छी नहीं लगती जो पूर्व काल की संस्कृति, सभ्यता व शिक्षा की समर्थक हो। दूसरा कारण यह भी है कि भारतीय वैदिक विद्या वा संस्कृत भाषा की वकालत करने वालों ने कोई ऐसा महत्वपूर्ण चमत्कार वर्तमान समय में नहीं किया, जिसे पाश्चात्य विद्या विज्ञान के सम्मुख कुछ भी महत्व मिल सके।** बड़े-2 कथित वैदिक विद्वान्, संस्कृत भाषा के पण्डित, दर्शनाचार्य सभी पाश्चात्य विज्ञान व टैक्नोलोजी के सम्मुख नतशिर होकर उनका सगर्व प्रयोग कर रहे हैं। वेद, दर्शन आदि का नाम लेकर जो संस्थाएं चल रही हैं, जिन विद्वानों की आजीविका चल रही है, उनके बच्चे भी संस्कृत वा वैदिक विद्या को नहीं पढ़ते। पिता वा गुरु व नेता संस्कृत भाषा व आर्ष विद्या की बात तो करते हैं परन्तु पुत्र, शिष्य व अनुयायी अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य मैकाले की शैली की शिक्षा न केवल देश अपितु विदेश में जा-जाकर

ग्रहण करते हैं, तब वेदादि शास्त्रों व संस्कृत भाषा को कौन पढ़ेगा और कैसे इससे भारत को विश्व के उच्च विकसित विज्ञान का गुरु बनाया जा सकेगा? यह बात गम्भीरता से सोचने का अवसर किसी के पास नहीं है। यदि श्री मोदी आधुनिक विज्ञान व टैक्नोलोजी का बहु आयामी विकास करके स्पर्धा में चीन, अमेरिका, फ्रांस, जापान व जर्मनी जैसे विकसित देशों से आगे जाकर भारत को जगद्गुरु बनाने की बात करते हैं, तब भी जगद्गुरु का स्वप्न पूर्ण नहीं होगा। **भले ही हम स्वच्छ प्रशासन, प्रबल पुरुषार्थ व भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाकर विश्व में सर्वोत्कृष्ट कम्प्यूटर, अन्तरमहाद्वीपीय मिसाइलें, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रॉन बम जैसे घातक अस्त्र बना लें। ऐलोपैथी चिकित्सा, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में हम क्रान्तिकारी विकास करके भारत की शिक्षा पद्धति को उच्चतम शिखर पर पहुँचा कर ऐसे विश्वविद्यालयों, आई.आई.टी., आई.आई.एम. व ऐम्स जैसे शिक्षण संस्थानों को विश्व के सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलाने में कभी सफल हो जायें। हमारा 'इसरो' अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' को पीछे छोड़ दे और भले ही हम विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' से बड़ी प्रयोगशाला बनाकर संसार के सभी देशों के मार्गदर्शक व नेता बन जायें परन्तु नैतिकता की दृष्टि से भारत को जगद्गुरु बनने हेतु यह पर्याप्त योग्यता व सामर्थ्य नहीं होगी।** आज भारत को आर्थिक महाशक्ति व आध्यात्मिक महाशक्ति भी बनाने की चर्चा कुछ उत्साही महानुभाव विभिन्न चैनलों से करते रहते हैं परन्तु मुझे लगता है कि जगद्गुरु, महाशक्ति, आध्यात्मिक व वैदिक सम्पदा इन चार शब्दों का यथार्थ भाव अभी तक समझा नहीं गया है। सस्ते सुन्दर स्वप्न देखने व दिखाने से भारत जगद्गुरु नहीं बन पायेगा। हाँ, मैं मोदी जी सहित ऐसे सभी देशभक्तों की इच्छा व प्रयास की सराहना अवश्य करता हूँ कि देश में ऐसा एक प्रधानमंत्री तो बना जो देश के उत्कर्ष की, उसे जगद्गुरु बनाने की बात तो करता है। प्रबल इच्छा तो करता है। जब देश के नेतृत्व की प्रबल इच्छा हो और ईमानदारी से अफसरशाही उस पर अमल भी करे, देश की जनता पूर्ण सहयोग करे तो भारत का जगद्गुरु बनना असम्भव तो नहीं है।

अब मैं उपर्युक्त उस बिन्दु पर आता हूँ कि देश को महान् वैज्ञानिक व आर्थिक शक्ति बनाने पर भी जगद्गुरु का पद हमारे देश को क्यों नहीं मिल सकता? इस विषय में मेरा मत है कि हम इन क्षेत्रों में जो भी उन्नति करेंगे, जो भी पढ़ेंगे वा पढ़ायेंगे, उन सब पर पश्चिमी वैज्ञानिकों व अर्थशास्त्रियों की ही छाया होगी। उन्हीं का ही पढ़ेंगे फिर भले ही हम उनसे आगे क्यों न बढ़ जायें। **आज हमारी पीढ़ी जो भी पढ़ रही है, उसमें आयुर्वेद, हिन्दी, संस्कृत भाषा के अतिरिक्त कोई भी ऐसा विषय नहीं है, जिसका मूल प्राचीन भारतीय विद्या से सम्बन्ध हो, जिनकी पाठ्य पुस्तकों में प्राचीन भारतीय विद्वानों, ऋषियों का नाम भी विद्यमान हो।** हाँ, राजनीति शास्त्र व समाजशास्त्र आदि की कुछ पुस्तकों में भगवान् मनु आदि का नाम मिल सकता है। वर्तमान विद्वानों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द आदि का नाम मिल सकता है। विज्ञान की पुस्तकों में सी.वी. रमन, सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा,

होमी भाभा, जगदीशचन्द्र बसु आदि भारतीय वैज्ञानिक तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में से चन्द्रशेखर, सुब्रह्मण्यम्, हरगोविन्द खुराना आदि कुछ वैज्ञानिकों के नाम व उनके सिद्धान्त हम पढ़ सकते हैं परन्तु इनके वैज्ञानिक बनने के पीछे कोई भारतीय प्राचीन विज्ञान कारण नहीं था, बल्कि ये उसी विद्या को पढ़े थे, जिसको हमारे देशभक्त मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति नाम देकर निन्दा करते हैं। भारत में जो भी देशभक्त वा वेदभक्त कहाने वाले सामाजिक संगठन हैं, वे अपने विद्यालयों में वही पढ़ाते हैं, जिसकी वे मंच पर निन्दा करते हैं। **आज वेद, दर्शन, ब्राह्मणग्रन्थ आदि को जो स्वरूप भारत में पढ़ा वा पढ़ाया जा रहा है, क्या उसके आधार पर हम ऐसे वैज्ञानिक उत्पन्न कर सकते हैं? यदि नहीं तो भारत को कैसे जगद्गुरु बनाया जा सकता है? ऐसी स्थिति में यह विचार करना आवश्यक है कि भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ क्या है?** इस विषय पर मेरा विचार यह है कि भारत के जगद्गुरु का अर्थ जानने से पूर्व हम यह जानने का प्रयास करें कि **भारत के भारत होने का अर्थ क्या है, आज भारत भारत रहा ही कहाँ है? वह तो आज इण्डिया बन चुका है।** पहले यह आर्यावर्त था फिर भारत फिर हिन्दुस्तान और अब इण्डिया बन गया। हिन्दुस्तान तक भी यह भारत स्वदेशी विचारधारा की नींव पर खड़ा था परन्तु अब यहाँ स्वदेशी कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस देश का नाम जब आर्यावर्त था तब यह देश वास्तव में जगद्गुरु था व चक्रवर्ती राष्ट्र भी था। जब चन्द्रवंशी सम्राट् दुष्यन्त पुत्र भरत का इस देश में शासन था तब भी यह भारत जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र था। इसी महान् राजा के नाम से इस देश का नाम भारत है, ऐसा सर्वविदित है। महाभारत काल तक भी भारत के पास यह पद विद्यमान था। आज हम जिन नालंदा व तक्षशिला विश्वविद्यालयों की बात करते हैं। ये सभी महाभारत काल से बहुत काल पश्चात् के हैं। इस कारण उस समय की विद्या इस देश के आदिकाल से लेकर महाभारत काल की विद्या की अपेक्षा अति न्यून थी। यद्यपि इस मध्यकाल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन एवं ब्रह्मगुप्त जैसे अनेक वैज्ञानिक व गणितज्ञ हुए जो अपने समय के विश्व विख्यात व्यक्ति थे। इस काल के संस्कृत भाषा के कवि व साहित्यकारों का मेरी दृष्टि में कोई महत्व इस कारण नहीं है क्योंकि ये सभी भले ही भाषा व व्याकरण के विद्वान् थे परन्तु सभी ने शृंगार रस में डूबकर भारत व मानवजाति को अश्लीलता की कीचड़ में ही धकेला है। गाली संस्कृत भाषा में दी जाये अथवा हिन्दी वा अंग्रेजी में परन्तु है तो अपराध ही। इन साहित्यकारों के हृदय में वेद व ऋषियों के सदाचार व ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं होने से हर सदाचारी को इन्हें हेय दृष्टि से ही देखना चाहिए। दुर्भाग्य से आज संस्कृत साहित्य के नाम पर यही अपराध किया जा रहा है, जिससे संस्कृत भाषा का स्थान देववाणी के रूप में रहा ही नहीं है। इस कारण मेरा मत यह है कि जब तक भारत रामायण व महाभारत कालीन आर्य ऋषियों, देवों के महान् विज्ञान व तकनीक का विकास नहीं करेगा, उसे खोज नहीं सकेगा, तब तक हम भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। उस समय आयुर्वेद का जो उत्कर्ष था, वह आज की अत्यन्त विकसित ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी नहीं है। युद्धरत योद्धाओं के घाव तत्काल भरने त्वचा का रंग रूप तत्काल ही

पूर्ववत् करने की पद्धति आज कदाचित् विकसित नहीं है। श्रीराम व लक्ष्मण को नागपाश से मुक्त करने हेतु महान् आयुर्वेदाचार्य गरुड़ ने केवल हाथ के स्पर्श से न केवल उन्हें मूर्छा से मुक्त किया अपितु उनके घाव भरकर त्वचा को भी पूर्ववत् तत्काल ही कर दिया था। आज रैकी चिकित्सा पद्धति अवश्य है परन्तु इतनी त्वरित गति से चिकित्सा करना उसका सामर्थ्य नहीं है। उस समय योद्धाओं को चिकित्सालय में महीनों भर्ती रहने का कहीं वर्णन नहीं है। रावण के पुष्पक विमान की यह विशेषता कि विधवा के बैठने पर विमान उड़ ही नहीं पाता था, यह कौन सी तकनीक थी? **वायव्य अस्त्र, आग्नेय अस्त्र, पर्जन्य अस्त्र, मोहिनी अस्त्र, वैष्णवास्त्र, आसुर अस्त्र, माहेश्वरर अस्त्र, ऐन्द्रास्त्र, पाशुपत अस्त्र, ब्रह्मास्त्र, सुदर्शन चक्र, वज्र आदि अस्त्र न केवल महाशक्तिशाली थे अपितु इनमें से कुछ प्रयोक्ता के विचारों का अनुसरण करते हुए सीमित वा व्यापक लक्ष्य निर्धारित करने की दैवी तकनीक से सम्पन्न भी थे। यह तकनीक आज नहीं** है कि अणुअस्त्र को इस विचार से छोड़ा जाये कि वह एक लक्षित व्यक्ति का ही विध्वंस करेगा, अन्य को कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। महात्मा नारायण का नारायणास्त्र जिसका प्रयोग अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर किया था, वह निरस्त्र होकर शान्त खड़े रहने पर कोई क्षति नहीं पहुँचाता था और उसका सामना करने पर उग्रतर होता जाता था तथा प्रत्येक प्रयोक्ता के द्वारा पुनः प्रयुक्त नहीं किया जा सकता था, यह आर्यों की तकनीक अब किस देश के पास है? देवों, गन्धर्वों, असुरों की विमान विद्या की समता आज कौन सा देश कर सकता है? उस समय प्रत्येक अस्त्र का प्रतिरोधक अस्त्र होता था। आज वह किस देश के पास है? पिछले कुछ वर्ष पूर्व जयपुर के ऑयल-डिपो में आग लगी और भारत के पेट्रोलियम मंत्री ने असहाय होकर कहा था कि हम आग के स्वतः शान्त होने की प्रतीक्षा ही कर सकते हैं। आज देश के पास आर्यों का पर्जन्य अस्त्र होता तो तत्काल वृष्टि कराके आग को रोक सकता था। **जापान के पास एण्टी एटम बम होता तो वहाँ महाविनाश नहीं होता। आर्यों के अस्त्र शत्रु को मारकर वापिस भी आ सकते थे। प्रक्षेपण के पश्चात् योद्धा यदि चाहता तो वापिस भी लौटा सकता था, आज यह तकनीक किस देश के पास है?** हम रामायण व महाभारत में कहीं यह भी नहीं पढ़ते कि इन विशाल युद्धों के पश्चात् पर्यावरण का प्रदूषण होकर कोई महामारी वा प्राकृतिक प्रकोप फैला हो। कौन सी टैक्नोलॉजी थी कि महाविध्वंसकारी अस्त्रों के प्रयोग से लाखों जान जाने पर भी पर्यावरण पर कोई प्रभाव नहीं होता था। आकाश गमन करना, रूप बदलना, अदृश्य होना, लघु व विशाल रूप धारण करना, आदि जैसी सिद्धियों का होना कुछ समाजों में विशेषकर देवों, गन्धर्वों, असुरों, वानरों में साधारण बात थी। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों व उनके महर्षि व्यास भाष्य से इनका वैज्ञानिक आधार परिलक्षित होता है, कोई इन्हें गम्भीरता से पढ़ने का यत्न तो करे। आज योग का यथार्थ स्वरूप कहीं लेशमात्र भी दिखायी नहीं देता। उस समय अध्यात्म व पदार्थ विज्ञान दोनों ही उत्कर्ष पर थे, तब यह देश जगद्गुरु भी था और चक्रवर्ती सम्राट् भी।

–(शेष अगले अंक में)

वैदिक विज्ञान की शब्दावली

Terminology of Vedic Science

लेखकः -कृपालसिंह वर्मा, 253, शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ. प्र०)

उपनिषद ग्रन्थ वेद मंत्रों की आध्यात्मिक व्याख्या करते हैं तथा ब्राह्मण ग्रन्थ वेद मंत्रों की वैज्ञानिक व्याख्या करते हैं। किसी वैज्ञानिक अनुष्ठान को यज्ञ कहते हैं तथा यज्ञ शिल्पविद्या (Technology) के जनक होते हैं। जब महर्षि दयानन्द ने उद्घोष किया कि देशवासियों को अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त यज्ञ करने चाहिए तो उनका आशय शिल्प विद्या के विकास से था। उनके यजुर्वेद भाष्य से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। महर्षि दयानन्द का सारा जीवन आध्यात्मिक अन्धकार को मिटाने में ही चला गया, जो उस समय की प्रथम आवश्यकता थी परन्तु फिर भी उनकी कलम से अनायास ही कुछ ऐसे वैज्ञानिक संकेत प्रस्फुटित हो गये जिनके लिए हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे। उनके उद्घोष ने कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" विज्ञान के विद्यार्थियों का ध्यान वेदों की ओर आकर्षित किया। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में तार विद्या, विषय, नौ विमान विद्या विषय आदि स्थलों पर उन्होंने वैदिक मंत्रों के तकनीकी अर्थ किये। निरुक्त का भाष्य तथा अब सत्यार्थ प्रकाश में वैशेपिक तथा सांख्य सूत्रों की विज्ञान परक व्याख्या ने विद्यार्थियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया।

वैदिक विज्ञान को समझने के लिए वैदिक विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक होता है। ये ज्ञान हमें ब्राह्मण ग्रन्थों से ही मिल सकता है। ऐतरेथ ब्राह्मण ऋग्वेद की विज्ञानिक व्याख्या है इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद की वैज्ञानिक व्याख्या है। निरुक्त का दैवत काण्ड प्राकृतिक शक्तियों का स्पष्ट वर्णन करता है।

वैदिक विज्ञान के अनुसार तीन प्रकार की प्रमुख शक्तियां हैं। भूलोक पर पायी जाने वाली शक्ति अग्नि, अन्तरिक्ष में पाई जाने वाली शक्ति इन्द्र अर्थात् विद्युत है तथा द्युलोक में पायी जाने वाली शक्ति सूर्य है। अन्य सब शक्तियां इन तीनों शक्तियों का ही विस्तार है। इन तीनों शक्तियों के कर्म के आधार पर इनके अनेक नाम हो गये हैं।

वैदिक विज्ञान ने संसार में पाये जाने वाली सभी पदार्थों को पांच भागों में विभक्त कर दिया है। इन्हें वैदिक विज्ञान के पांच तत्व भी कहते हैं इनमें जो सबसे सूक्ष्म तत्व हैं वह आकाश तत्व हैं। सृष्टि की रचना में सबसे पहले आकाश तत्व का निर्माण होता है। प्रकृति का जो सबसे सूक्ष्म टुकड़ा है जिसे काटा नहीं जा सकता वह वैदिक परमाणु है। साठ परमाणु मिलकर एक अणु का निर्माण करते हैं। आकाश तत्व का एक अणु साठ मूल परमाणुओं से मिलकर बनता है। आकाश तत्व की उपस्थिति का ज्ञान हमें केवल

अपने कानों से होता है। आकाश तत्व के अणु जब कम्पन करते हैं तो इससे ध्वनि उत्पन्न होती है। इस ध्वनि को हम अपनी श्रोता ज्ञानेन्द्रियों से ग्रहण करते हैं। जो तत्व जितना सूक्ष्म होता है उसकी व्यापकता उतनी ही अधिक होती है। आकाश तत्व के बिना ध्वनि का संचार नहीं हो सकता। इसी सम्बन्ध में आधुनिक विज्ञान ने ईथर की कल्पना की थी।

आकाश रिक्त स्थान को कहते हैं तथा आकाश तत्व प्रकृति की प्रथम अणु रूप अवस्था को कहते हैं। ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कम्पन करना आवश्यक है। यदि आकाश तत्व के अणु नहीं है तो कौन कम्पन करेगा? तथा यदि आकाश अर्थात रिक्त स्थान नहीं है तो कहाँ कम्पन करेगा?

हमारी श्रौत्र इन्द्रिय ज्ञानेन्द्रियों में सबसे सूक्ष्म होती है। इसका निर्माण आकाश तत्व से होता है। तभी इसमें आकाश तत्व के कम्पनों को ग्रहण करने की शक्ति होती है।

श्रौत्र इन्द्रिय का देवता अश्विनौ है।

अशविनौ का अर्थ है दो अश्विन।

कम्पनों की तीव्रता के अनेक स्तर होते हैं। लेकिन इन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है।

(1) मन्द कम्पन.................अश्विन–1

(2) तीव्र कम्पन.................अश्विन–2

ध्वनि से शब्द का निर्माण करने के लिए इन दो प्रकार के कम्पनों की आवश्यकता पड़ती है। इनको ही वैदिक विज्ञान में "अश्विनौ" कहते हैं।

आकाश तत्व के अणुओं से जिस तत्व का निर्माण होता है उसे वायु तत्व कहते हैं। वायु प्राण रूप होती है। वायु की उपस्थिति का ज्ञान स्पर्श द्वारा होता है। इसको आँखों से नहीं देखा जा सकता। गैस वायु तत्व नहीं है। गैस के अणु जिसकी शक्ति से गति करते हैं वह वायु है। इन्द्र अर्थात् विद्युत वायु का ही रुप है। आकाश के दो अणुओं से मिलकर वायु तत्व का एक अणु बनता है। अर्थात् वायु के एक अणु में 60 x2 = 120 वैदिक परमाणु होते हैं। वायु तत्व दो प्रकार का होता है– (1) मित्र (Positive Charge), (2) वरुण (Negetive Charge)

जब वायु मिथुनीकृत हो जाती है तो इसका प्रवाह वरुण से मित्र की ओर होता है। तार में विद्युत है या नहीं इसका ज्ञान स्पर्श से हो जाता है। विद्युत अधिक आवेश कम आवेश की ओर चलती है। अधिक आवेश की स्थिति को वरुण तथा कम आवेश की स्थिति को मित्र कहते हैं।

वायु तत्व का दूसरा रूप अग्नि है। अग्नि उच्च तापक्रम से निम्न तापक्रम की ओर बहती है। वैदिक विज्ञान में निम्न तापक्रम की अग्नि को मित्र तथा उच्च तापक्रम की अग्नि को वरुण कहते हैं। हमारी स्पर्श इन्द्रिय वायु तत्व से बनती है तभी तो यह विद्युत तथा सर्दी गर्मी को स्पर्श से जान लेती है। ये मित्र वरुण देवता स्पर्श इन्द्रिय के देवता है। यह मित्र वरुण का वैज्ञानिक स्वरूप है।

वायु से स्थूल तत्व ज्योति है जिसे प्रकाश कहते हैं। वैदिक विज्ञान में तीन प्रकार की ज्योतियों का

वर्णन मिलता है–1. अग्नि ज्योति, 2. विद्युत ज्योति, 3. सूर्य ज्योति।

हमारी चक्षु प्रकाश तत्व से मिलकर बनी है तभी तो ये प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती है। चक्षु का देवता अग्नि सोम है। अग्नि–सोम देवता युग्म रूप है। यह आँखों की देखने में सहायता करते हैं। अग्नि प्रकाश स्वरूप होता है तथा सोम अन्धकार स्वरूप होता है। प्रकाश तीव्रता अनेक स्तर की होती है लेकिन इसे दो भागों में बांटा जा सकता है। (1) तीव्र प्रकाश युक्त बिन्दु (2) मन्द प्रकाश युक्त बिन्दु। आँख के पर्दे पर किसी वस्तु का चित्र अन्धकार तथा प्रकाश के योग से बनता है। किसी बिन्दु पर प्रकाश की अधिकता तो किसी पर अन्धकार की अधिकता होती है। किसी वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश की तीव्रता उन बिन्दुओं पर असमान होती है। वैदिक विज्ञान में प्रकांश की तीव्रता को अग्नि तथा प्रकाश की मन्दता को सोम कहते हैं। यही अग्निसोम देवता आँखों को देवता है जो देखने में सहायता करता है।

चौथा तत्व आप: है जिसे जल तत्व भी कहते हैं। जिसका गुण रस है जो रसना से ग्रहण किया जाता है। पाँचवा तत्व पृथिवी है जिसका गुण गन्ध है जिसका ग्रहण नासिका से होता है। संसार में दो प्रकार के पदार्थ पाये जाते हैं। (1) गन्धहीन– आप: तत्व (2) गन्धयुक्त पृथिवी तत्व।

इस प्रकार वैदिक विज्ञान के पाँच तत्व हैं–(1) पृथिवी (2) आप: (3) प्रकाश (4) वायु (5) आकाश। इसमें पृथिवी तत्व तथा जल तत्व आधुनिक विज्ञान में Matter के अन्तर्गत आते हैं तथा अग्नि, वायु और आकाश ये Energy के अन्तर्गत आते हैं। ❁❁❁

ओ३म्

न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजमो अन्तमानशुः।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमग्रषक्।। – ऋग्वेद 1।52।14

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्रभु की अनुकूलता में रहकर संसार को अपने अनुकूल बनाने की प्रेरणा की गई है। प्रभु की महिमा अनन्त है। उसके विस्तार को सम्पूर्ण ब्रह्मांड से भी नहीं नापा जा सकता। वासनाओं से संग्राम करने वाले मनुष्य के लिये प्रभु की देन अनन्त हैं। प्रभु उसे किसी प्रकार की कमी का अनुभव नहीं होने देते। वस्तुत: एक ओर प्रभु हैं दूसरी ओर सारा संसार। जो प्रभु को अपनाता है प्रभु उसके लिये संसार को अनुकूल कर देते हैं। जो प्रभु की उपेक्षा करता है वह संसार से ही कुचला जाता है।

हम प्रभु की अनन्त महिमा को समझते हुए उसे ही अपनाऐं और उसकी कृपा से संसार को अपने अनुकूल बनाऐं।

अहंकार समस्त महान गलतियों की तह में होता है।

Pride is the bottom of all great mistakes.

अन्धेर खाता

रचयिताः– पं० नाथूराम शंकर शर्मा 'शंकर'

पंच का लेखा दिया सा, दमदमाता देख लो।
आग सा अन्धेर खाता, धकधकाता देख लो।।1।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

भानु, चन्द्रमा, तारागण से, गुणियों को धमका लो।
गरजो रे वकवादी मेघो, छल–कौंधा दमका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

मोह–अभ्र से ज्ञान–सूर्य का, प्रतिभा–दृश्य दुरा लो।
विद्या–ज्योति विहीन जड़ों का, सुख–सर्वस्व चुरा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

धर्माधार–महामण्डल में, अपनी जीत जता लो।
ब्रह्म–वीर श्री दयानन्द को, हारा शत्रु बता लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमका टेक।।

भिन्न मतों के वेष निराले, पन्थ अनेक बना लो।
धर्म–सनातन के द्वारा यों, कुनबा घेर घना लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

मन में श्रद्धा बुद्धदेव की, धींग धसोड़ धसा लो।
मौखिक शब्दों में शंकर का, प्रेम–पवित्र बसा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

झूँठा सब संसार बता दो, सत्य नाम अपना लो।
मायावाद सिद्ध करने को, रज्जु, सर्प, सपना लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

"सोहमस्मि" से वेद विरोधी, मायिक मंत्र सिखा लो।
परमत्व भूले जीवों को, ब्रह्मस्वरूप दिखा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

कूट–कल्पना के प्रवाह में, वाद, विवाद बहा लो।
कर्महीन केवल बातों से, जीवनमुक्त कहा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

निर्विकार–अद्वैत–एक में, द्वैत–विकार मिला लो।
मायामय–मिथ्या–प्रपंच के, सबको खेल खिला लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

पौराणिक–देवों के दल को, अपनी ओर झुका लो।
भक्ति–भाव–लीला में उनके, खोट, कलंक लुका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

भूत, भूतनी, प्रेत, मसानी, मियाँ, मदार, मना लो।
ठीक ठिकानों पै ठगई के, जाल, बितान तना लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

चेतन के पँजे जड़ता पै, गाल बजाय जमा लो।
पिण्डी, प्रतिमा पूज, पुजा लो, वित्त–विशुद्ध कमा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

भोले भावुक–यजमानों को, डाँट डराय हिला लो।
मारो माल मरे पितरों को, सोदक पिण्ड दिला लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

उमगो लीला अवतारों की, मानव रास रचा लो।
छैल छोकड़ों की छवि देखो, उद्धत–नाच नचा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

पंच मकारी कौल–चक्र में, परम प्रसादी पा लो।
श्री जगदीश–पुरी में जा के, सबकी जूठन खा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

राम नाम लेकर पापों के, भार अतोल उठा लो।
हरि भक्तो! हलके होने को, सुरसरिता में नहा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

जन्मकुण्डली काढ़ जाल की, दिव्य आग दहका लो।
खेट खरे, खोटे बतला के, धनियों को बहका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमका लो।। टेक।।

साधु कहालो भण्ड भीड़ में, सण्ड–समूह सटा लो।
रोट खाय पाखण्ड–फण्ड के, लण्ठो! लहर पटा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

कामदेवता के अंकुश में, लोह–कड़ा लटका लो।
नंग नाच रचलो, बाबाजी, चिमटे को चटका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

मुँज-मेखला बाँध गले में, कठ कण्ठे लटका लो।
मादकता की साधकता में, योग-ध्यान अटका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

अपने अन्यायी जीवन की, धुँधली ज्योति जगा लो।
निन्दा करो महापुरुषों की, ठग लो और ठगा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

भारत की भावी उन्नति का, प्रण से पान चबा लो।
चन्दा लेकर धर्म कोष को, सबके दाम दबा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

हाँ उपदेशामृत पीने को, श्रोता बदन उबा लो।
शुद्ध सत्य-सागर में सारे, भ्रम, सन्देह डुबा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

माता, पिता और गुरु पत्नी, सबसे शुभ-शिक्षा लो।
जामदग्न्य, प्रह्लाद, चन्द्र की, भाँति सुयश-भिक्षा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

गरमी, नरगी की माया को, डौल बिगाड़ डुला लो।
कूद फाँद जातीय सभा का, उन्नत-काल बुला लो।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

पाय चाकी धर्म कमालो, खाकर घूँस पचा लो।
मौज उड़ालो मासिक से भी, तिगुना वित्त बचा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

देशी उद्यम की उन्नति का, गहरा रंग रंगा लो।
अन्न विदेशों को भिजवा दो, काठ कबाड़ मँगा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

मूल ब्याज, की मार धाड़ से, ऋणियों को पटका लो।
ध्यान धरो पौढ़े ठाकुर का, कर माला सटका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

लड़की लड़कों के ब्याहों में, धन की धूलि उड़ा लो।
नाक न कटने दो, निन्दा से, कुल का पिण्ड छुड़ा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

बच्ची, बच्चों मिल मंडप में, बैठो मन बहला लो।
गौरि, गिरीश, रोहिणी, चन्दा, कन्या, वर, कहला लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

पीले हाथ करो दुहिता के, दस तोड़े गिनवा लो।
वरनी के बाबा से वर पै, नाक चने बिनवा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

विद्या-हीन-अंगना-गण के, उन्नत-अंग नबा लो।
पिसवा लो, खाना पकवा लो, बकने गीत गवा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमका लो।। टेक।।

विधवा-दल के दुष्कर्मों से, घर का मान घटा लो।
हत्यारे बनकर पंचों में, कुल की नाक कटा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमका लो।। टेक।।

खेलो जुआ हार धन, दारा, मार कुयश की खा लो।
नल की पदवी से भी आगे, धर्मपुत्र-पद पा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

रण्डी पर चोटी तक वारो, मुतफुल्ली उड़वा लो।
खैरूलमाकरीन से खाँजी, मक्र-छूत छुड़वा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

मदिरा, ताड़ी, भंग, कसूमा, पीलो अमल खिला लो।
चूँसो धुँआँ चरस, गाँजे में, चाँडू, मदक मिला लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

सोंध सड़े गुड़ में तम्बाकू, घान घने कुटवा लो।
आद मान बढ़े हुक्के का, भारत को लुटवा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

होली के हुल्लड़ में रसिको, रस के साज सजा लो।
हिन्दूपन के सभ्यभाव का, ढिल्लड़ ढोल बजा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

वैदिक-वीरो! अन्ध-यूथ में, तुम भी टाँग अड़ा लो।
बाँट बड़ाई का बढ़िया से, बढ़िया और बड़ा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

माँगो गुरुकुल के मेलों में, मंगल-कोश बढ़ा लो।
भिक्षा को उलटी लटका दो, शुल्कद-शिष्य पढ़ा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

कुल-वीरों को पाठ-पछाडू, पढुओं से पढ़वा लो।
ग्रन्थों में हुरदंग, पोप से, प्रेम-शब्द बढ़वा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

धीरो! ब्याह करो विधवा को, धर्म-सुधा बरसा लो।
फिर दे दण्ड धींग-पंचों को, पाप-दृश्य दरसा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

युक्ति-वाद से छदम्वाद की, खाल खींच कढ़वा लो।
पै संगीत और कविता पै, धर्म-दोष मढ़वा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

ढोल, चिकारे की मिल्लत में, करतालें खड़का लो।
राग, रागनी, ताल, स्वरों को, तोड़ो! तन फड़का लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

वेदों की वेदी पर चढ़ लो, ऊल ऊल कर गा लो।
कोरी कर ताली पिटवा लो, धोरी धिक धिक धा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

तुक्कड़ लोगो! तुकबन्दी पै, हित का हाथ फिरा लो।
श्री कविता देवी के सिर से, मान-किरीट गिरा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

हाय! अजानों के दंगल में, झूँठी ठसक ठँसा लो।
सिद्ध प्रतापी कविराजों पै, हँस लो और हँसा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

वक्ता जी शुभ-कर्म-कथा पै, बस हाँमी भरवा लो।
पर देखें सब श्रोताओं से, पंच यज्ञ करवा लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

शंकर जी पहले पापों का पलटा आप चुका लो।
औरों से क्यों अटक रहे हो, अपनी ओर थुका लो।।
इस अन्धेरे में रे, अन्धी चालाकी चमकालो।। टेक।।

❁❁❁

होता है। आप अनुभव करके देखेंगे कि जो भाषा का अच्छा विद्वान है वह निश्चित रूप से नैतिक मापदण्डों में आदर्श होता है। हम लेखकों और कवियों के जीवन को देख सकते हैं तात्पर्य यह है कि यदि हम व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रिय जीवन को उन्नत और सुखी बनाना चाहते हैं तो हमें अपनी मातृभाषा की गोद में बैठना ही पड़ेगा। मैं समझता हूँ संसार में भारत ही वह दुर्भाग्यशाली देश है। जो अपनी संस्कृति और भाषा को समाप्त करने में पूर्ण पुरुषार्थ कर रहा है यह बात भिन्न है कि यहाँ की भाषा और संस्कृति भी ऐसी अमृतमयी है जिसको समाप्त करना दुष्कर है। वरना यहाँ का व्यक्ति कोई कमी नहीं छोड़ रहा है। हमें एक विद्यालय के उद्घाटन समारोह में बुला लिया गया। वह विद्यालय अंग्रेजी माध्यम का था वहाँ विधायक, अन्य गणमान्य व्यक्ति यहाँ तक कुछ पढ़े लिखे साधु भी विद्यालय की भव्यता के गीत गा रहे थे प्रिंसिपल साहब बड़े गर्व से अंग्रेजी में व्याख्यान देते हुए कह रहे थे कि हमारे विद्यालय की आज प्रारम्भ अवस्था है दो–चार वर्ष में यहाँ का प्रत्येक बालक अंग्रेजी में बात करेगा, हिन्दी को बोलना ही भूल जायेगा सभी लोग तालियाँ देखा देखी बजा रहे थे देखा–देखी इसलिए क्योंकि उन प्रिंसिपल साहब के व्याख्यान को अंग्रेजी मे होने के कारण 98 प्रतिशत लोग देहात के बैठे थे वे समझ ही न पा रहे थे। हमें यह दृश्य देखकर बड़ा शोक हुआ कि इस देश में पैदा हुआ व्यक्ति इसी देश की भाषा बोलकर बड़ा हुआ व्यक्ति धन व्यय करके पूर्ण पुरुषार्थ हिन्दी भाषा को समाप्त करने में लगा रहा है। हम इस बात पर भी ताली बजा रहे हैं धन्य है हमारी मूर्खता। विश्व में सम्भवतः भारत देश ही ऐसा होगा जहाँ के लोग अपने विनाश की घोषणा का स्वागत ताली बजाकर करते हैं।

तथाकथित अंग्रेजी पढ़ने वाले काले अंग्रेज यह बात कहते नहीं थकते हैं बिना अंग्रेजी के उत्थान कैसे होगा। मैं उनसे पूछता हूँ रूस, जर्मन, जापान कैसे समृद्ध और उन्नत हैं वहाँ तो अंग्रेजी नहीं है। आजकल के प्रसिद्ध सन्त स्वामी रामदेव जी महाराज के चरणों में हमने देखा है अंग्रेजी पढ़ा लिखा वही वर्ग बैठने में अहोभाग्य समझता है। सारे देश की सत्ता को ही उन्होंने बदलके रख दिया है। कांग्रेस जैसी 60 वर्ष से सत्ता पर जमी पार्टी को धूल चटा दी। जबकि स्वामी रामदेव महाराज का अंग्रेजी ज्ञान नाम मात्र को बिल्कुल नहीं जानते हैं। उनका विकास तो गुरुकुल में बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर मातृभाषा की गोद में खेल कर ही हुआ है। लाखों आदमियों को दिशा देने का काम उन्होंने किया है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा भारत की सांस्कृतिक नौका को डूबते हुए से बचा लिया है। इसलिए इस कोरे तर्क के भ्रमजाल में पढ़कर राष्ट्रघातक कदम राष्ट्र भाषा को समाप्त कर न उठायें।

हम देखते हैं धार्मिक संस्थान भी प्रदूषित हवा में बह गये हैं सर्वत्र अंग्रेजी भाषा में नाम लिखना, कार्ड छपवाना, देवनागरी लिपि त्याग कर रोमन लिपि का सहारा लेना आदि ऐसे कुकृत्य हैं जो हमारा सर्वनाश करेंगे ऐसी स्थिति जो राष्ट्रभक्त अपना, परिवार और राष्ट्र का कल्याण करना चाहता है। उसे संकल्प लेना चाहिए कि हम सर्वत्र अपनी मात्र भाषा को सम्मान देंगे। इसी से राष्ट्र और व्यक्ति का कल्याण सम्भव है। अन्यथा अनजाने राष्ट्रभाषा के अभाव में हम भावशून्य ऐसे पढ़े लिखे वर्ग का समूह खड़ा कर लेंगे जो अपने सर्वनाश का वातावरण अपने आप तैयार कर लेगा। दिल्ली में सब लोगों के सामने ही 17 वर्ष के बालक का वध मुख्य राजमार्ग पर गुण्डों ने कर दिया। कोई भी बोला नहीं क्योंकि वे अपनी भाषा से विमुख गूंगे और बहरे निकम्मे संवेदन शून्य थे। क्या हम चाहते हैं कि यह जंगली राज सर्वत्र हो यदि नहीं तो मातृभाषा को सम्मान देना सीखो। बच्चों को मातृभाषा योग्य बनाकर ही अन्य भाषा को सीखने दो।

आइये हम संकल्प लें और अपनी भाषा को अपनाकर आनन्दमय जीवन बनायें बहुत से धूर्त्त प्रकार चतुर लोगों ने हिन्दी को बिगाड़ कर ऐसी भाषा प्रस्तुत कर दी है जिसकी जितनी निन्दा की जाय कम है। उसे वे हिन्दी का सरलीकरण कहते हैं कविवर लाखनसिंह भदौरिया ने ठीक ही लिखा है कि–

जो स्वयं सरलता से जन्मी जन जीवन में, उस पर ही आज कठिनता का दोषारोपण।
जनता–माता का दूध पिया जो बड़ी हुई, अधरों–अधरों नाचा जिसके शैशव यौवन।
जिसके मुख से पहले 'स्वराज्य' का स्वर फूटा, जिसकी स्वर लहरी बनी क्रान्ति की चिनगारी।
उद्बुध राष्ट्र को किया प्रभाती गा गाकर, जिसने सींची जन जाग्रति की क्यारी–क्यारी।
सुरा मीरा के स्वर में जो गुन गुना रही, जिसका रस मिसरी घोल रहा मल्हारों में।
जिसमें कजली की तान छेड़ते चरवाहे, जिसके स्वर चिर परिचित हार कछारों में।
जिसका सारल्य सहारा बना अभावों में, तुलसी गाते हैं घर– घर सबके भावों में।
जिसके तुतले स्वर में कबीर का दर्शन है, दुख बंटा रहे दोहे रहीम के गाँवों में।
झोपड़ियों में चक्कियाँ सुनो घरघरा रहीं, जिसके रस–भीगे स्वर अब तक अँधियारे में।
ब्रजभूमि छोड़कर और कहीं फिर जन्म न हो, रसखान गा रहे अब तक गाँव हमारे में।
जो नगर–नगर में, डगर–डगर में उगी स्वयं, जिसको जन जीवन की धार नित सींच रही।
फिर उसे सरलता क्या देगी शासन सत्ता, जो सहज प्रस्फुटन पर ही आग उलीच रही।
हिन्दी हृदयों का नाद, राष्ट्र की भाषा है, तब उसे सरल करना तो एक तमाशा है।
तुष्टि नीति कुल बुला रही है भेजे में, वक्रता सरलता की रचती परिभाषा है।
जो देश विभाजन के मंथन से विष निकला, वह कुम्भ राष्ट्र के नील कण्ठ ने पान किया।
शासन का भस्मासुर अजमाता बार–बार, जनता के शंकर ने कैसा वरदान दिया।
वेदों का स्वर गुंजायमान जिसके स्वर में, जिसकी शंख ध्वनि गूँज रही है अम्बर में।
उस राष्ट्र–गिरा का रूप करो विद्रूप नहीं, जलते अंगारे फिर न बिखेरो घर–घर में।

❀❀❀

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण	150.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	10.00
शंकर सर्वस्व	120.00	महिला गीतांजलि	10.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	क्या भूत होते हैं	10.00
नारी सर्वस्व	60.00	आर्यों की दिनचर्या	10.00
शुद्ध कृष्णायण	50.00	महाभारत के कृष्ण	8.00
शुद्ध हनुमच्चरित (प्रेस में)	40.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00
संस्कार चन्द्रिका प्रथम भाग	40.00	सच्चे गुच्छे	8.00
विदुर नीति	40.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00	नवग्रह समीक्षा	6.00
चाणक्य नीति	40.00	आर्यसमाज और श्रीराम	6.00
वेद प्रभा	30.00	आचार्य श्रीराम शर्मा : एक सरल चिन्तन	5.00
शान्ति कथा	30.00	वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00
नित्य कर्म विधि	30.00	गायत्री गौरव	5.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
बाल सत्यार्थ प्रकाश	25.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
यज्ञमय जीवन (प्रेस में)		सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	5.00
दो बहिनों की बातें	25.00	मुक्ति प्रदाता त्रिवेणी	5.00
दो मित्रों की बातें	25.00	जीजा साले की बातें	5.00
मील का पत्थर (प्रेस में)		भागवत के नमकीन चुटकुले	5.00
सुमंगली (प्रेस में)		आदर्श पत्नी	5.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2014 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :-
व्यवस्थापक - कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मो. 9759804182

Yogendra # 9927136600

स्वामी, प्रका[illegible]क, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए रमेश प्रिन्टिग प्रेस, पंचवटी, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित